मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

फरवरी २००७ ▸ वर्ष ५७ ▸ अंक २

B.M.A. Trade & Holdings Pvt. Ltd.
36 "KOHINOOR" 105, Park Street,7th Floor, Kolkata- 700 016
Fax : 2226 7782 ✆ 2226 9995 / 3849, E mail : bmatrade@vsnl.net
REGD. OFFICE
4, Synagouge Street, 2nd Floor, Kolkata- 700 001
✆(Off) : 2242 2585 / 2749 Resi : 2478 8519 /3291 9137
Selling Agent for Raymonds Limited

समाज विकास

फरवरी, 2007
वर्ष 57, अंक 2
एक प्रति - 10 रु.
वार्षिक - 100 रु.
संपादक : नंदकिशोर जालान
सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

समाज विकास

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
2. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
3. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
4. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
5. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
6. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
7. भारत के कोने-कोने में फैले हुए 9 करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
8. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, 152-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-7, फोन : 2268-0319 के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा छपते छपते, 26-सी क्रीक रो, कोलकाता-700014 में मुद्रित।

समाज विकास विचार मंच

वैवाहिक आचार संहिता विषय पर लगातार हमें कई पत्र मिल रहे हैं। कई पत्र पक्ष में तो कुछ पत्र सुझाव के साथ तो कुछ में प्रतिक्रिया। हमारा यह प्रयास रहा है कि पत्रों को मूल भावना के साथ छापा जाए। हम चाहते हैं कि इस विषय पर आप अपने स्वतंत्र विचार :- इसे किस तरह घर-घर में पहुँचाया जाये, लागू किया जाये अथवा अन्य सुझाव हमें आगामी १० अप्रैल तक भेजने की कृपा करें। साथ में अपनी फोटो एवं परिचय भी जरूर भेजें। -सम्पादक

क्रमांक

चिट्ठी आई है - पृष्ठ 5 - 6
सम्पादकीय - पृष्ठ - 7
कार्यक्रम की सूचना - पृष्ठ - 8
अध्यक्षीय - पृष्ठ - 9
ताकि सामाजिक.... - पृष्ठ - 10
यत्र नारियस्तु पूज्यन्ते - पृष्ठ - 11
अमृतवाणी - पृष्ठ - 12
आयकर जानकारी - पृष्ठ - 13
बेटे के नाम पत्र - पृष्ठ - 14
गोष्ठी - पृष्ठ - 15-17
आत्मविश्वास - पृष्ठ - 18
होली सम्मान - पृष्ठ - 19-22
होली जलायें नहीं मंगलायें - पृष्ठ - 23
होली विशेष - पृष्ठ - 24
झरिया मारवाड़ी सम्मेलन - पृष्ठ - 26-28
विचार मंच - पृष्ठ - 29-30
युगपथ चरण - पृष्ठ - 31-34
श्रद्धा सुमन - पृष्ठ - 34

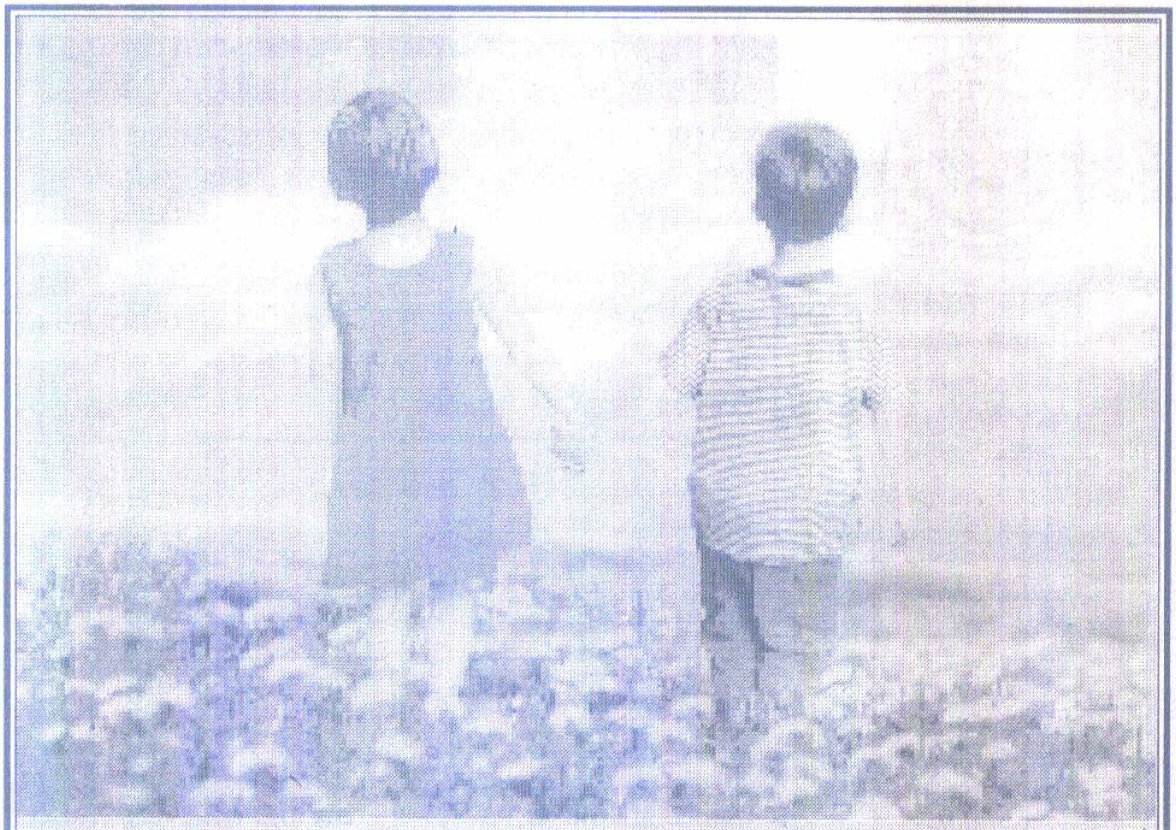

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance infrastructure. And there are Companies that also finance dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the letter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solutions. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of God makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion, Propelling us to see tomorrow Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

चिट्ठी आई है

'समाज विकास' मिला। पढ़कर अच्छा लगा। **वैवाहिक आचार-संहिता** बहुत प्रशंसनीय है। आजकल एक नई प्रथा चली है। वह है विवाह न लड़की वाले और न लड़के वाले के यहाँ बल्कि शहर में किए जा रहे हैं जहाँ शराब, ताश व फैल-फिजुरी में पानी की तरह रुपया बहाया जाता है। मेरा विनम्र सुझाव है कि इस प्रथा को बन्द कराना चाहिए।

-गिरधारी झुनझुनवाला
59, मुम्बई समाचार मार्ग, मुम्बई-400001

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का नववर्ष शुभकामना पत्र प्राप्त कर हर्षोल्लास हुआ। विशेषकर **वैवाहिक आचार-संहिता** के उल्लेख ने इस पत्र को प्रेरक बना दिया है। हमें सब अहर्निश इसका चिन्तन करते हुए इसके क्रियान्वयन हेतु कटिबद्ध हो जाएँ तो इसका पालन कठिन, पर असंभव नहीं। मैं आपकी समस्त परिकल्पनाओं की सफलता की प्रार्थना करता हूँ।

-गोविन्द प्रसाद शर्मा
सत्यम एपार्टमेन्ट, 97/99/4, श्री अरविन्द रोड, हावड़ा

क्रांतिकारी कदम

समाज विकास अक्टूबर एवं दिसम्बर अंक प्राप्त हुए। प्रकाशित सामग्री प्रेरक, पठनीय, मननीय एवं सराहनीय है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा के ऊर्जस्वी नेतृत्व में सम्मेलन प्रगति के नये मील स्तम्भ स्थापित करेगा ऐसी आशा और विश्वास है। न्यूनतम वैवाहिक सुधार कार्यक्रम निर्धारित कर सम्मेलन ने बहुत बड़ा क्रान्तिकारी कदम उठाया है। 'राष्ट्रीय चिन्तन शिविर' का आयोजन सचमुच अनूठा प्रयोग है। सुदृढ़ संगठन और राजनीति में सक्रिय भागीदारी अपना कर हम मारवाड़ी समाज की नई छवि निर्मित कर सकते हैं। पत्रिका में कतिवाओं, कहानियों और लघुकथाओं की कमी खटकती है।

-युगल किशोर चौधरी
उपाध्याक्ष, बिहार प्रा. मा. सम्मेलन, चनपटिया

'मारवाड़ी इमेज'

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति चुने जाने पर श्री सीताराम शर्मा को हार्दिक शुभकामनाएं।

मेरा आग्रह सामाजिक संस्थाओं (राजस्थानी) से सदा रहा है कि वह ऐसा प्रयास करे जिससे कि मारवाड़ी समाज (प्रवासी) की इमेज सुधरे। वर्तमान में फिल्मों से लेकर व्यावहारिक बोल-चाल की भाषा में 'मारवाड़ी' शब्द अनादर एवं माखौल का माना जाता है। उन कारणों को पता किया जाए और उन्हें दूर करने का प्रयास हो।

दूसरी बात राजस्थानी सामाजिक संस्थाओं की भूमिका सामाजिक अधिक रहे - आज 'मारवाड़ी इमेज' सामाजिक लेनदेन, फिजूलखर्ची एवं रिवाजों को लेकर ही खराब हुई है।

इस बार का समाज विकास मुझे ज्यादा पसन्द आया। इसमें सामाजिक विषयों पर ध्यान केन्द्रित हुआ है। मुखपृष्ठ पर जो आचार-संहिता छपी है उसमें और अधिक स्पष्टता होनी चाहिए। उनकी सीमा केवल भोजन तक ही नहीं रहे। इस सामाजिक आचरण संहिता को केवल उपदेशात्मक माना जाए या उसके पीछे कोई नैतिक बन्धन बाध्यता भी रहेगी?

-मधुश्री काबरा,
संपादक 'समाज प्रवाह'
गणेश बाग, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, मुलुंद (प.) मुंबई

समाज विकास 72वां स्थापना दिवस विशेषांक पढ़ा। अपनी बोली एवं कलम से सदैव समाज को सचेत करते रहने वाले बाबू नंदकिशोर जी जालान के कुशल सम्पादन में प्रकाशित इस पत्र के सभी अंक पठनीय होते हैं किन्तु एक सार्थक **वैवाहिक आचार-संहिता** सहित समाज विकास हित बड़ी

हाई टी बन्द होना चाहिए

वैवाहिक आचार संहिता पढ़ा। और तो सब ठीक है पर सगाई विवाह की मिठाई का खर्चा वर (लड़का) पक्ष वहन करे ये बात समझ में कम आयी।

*लड़की की शादी में तो मिठाई का खर्चा लड़की वालों का ही होना चाहिए। **लड़के की सगाई की मिठाई का खर्चा वर पक्ष वालों का होना चाहिए।***

*एक सुझाव मेरा यह है पहले सज्जन गोठ होने में करीब रात्रि का 12-1 बज जाता था इसलिए सगा के लिए "हाई टी" का प्रबन्ध चालू हुआ था। अब स्वागत समारोह की तरह विवाह पत्रिका में हाईटी छपने लग गया है, सो उतने ही व्यक्ति "हाई टी" में जाने लग गये हैं। मेरे विचार से **हाई टी बन्द होना चाहिए**। कारण की हाई टी और स्वागत समारोह में मात्र एक घन्टे का अंतराल अधिक से अधिक रहता है सो "हाई टी" का खर्चा एक अनावश्यक खर्चा है।*

-मुरलीधर चौधरी
25 बूढ़ा शिवतल्ला मेन रोड, कोलकाता-३८

संख्या में बड़े लोगों के आदर्श विचारों को अपने आँचल में समेटे यह अंक विशेष संग्रहणीय है। अंक की सामग्री यथेष्ठ है। कविवर गजानन्द वर्मा को रूंगटा पुरस्कार मिलने पर सभी राजस्थानी रचनाकारों की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई।

-ताऊ शेखावाटी

32, जवाहरनगर, सवाई माधो (राजस्थान)

समाज विकास अंक पढ़ा। मुझे गर्व है मैं भारतीय हूँ हिन्दू हूँ और मारवाड़ी समाज का अंग हूँ। गुण दोष सब धर्मों सब जातियों और सब तरह के वर्गों में है। हमें प्यार से, धैर्य से और समझदारी से दूर करने हैं अपने दोषों को। जो बचपन में सीख लिया, ग्रहण कर लिया और कुछ इरादे बना लिए वहीं एक मामूली जड़ से विशाल अटूट वृक्ष बन जाते हैं, उनको कोई नहीं हिला सकता। आपको कुछ करना है, दिल साफ है और हिम्मत है तो अपना पहले सुधार कीजिए, आत्म चिन्तन कीजिए। कहाँ चूक रहे हैं। युवा वर्ग को तिरस्कृत मत कीजिए। निराश मत होइए। प्रयत्न जारी रखिए।

-किशनलाल ईशरवालिया

33/1, नेताजी सुभाष रोड, 444 मार्शल हाऊस,
कोलकाता-1

समाज विकास के 72वाँ स्थापना दिवस विशेषांक में प्रकाशित ''वैवाहिक आचार संहिता'' एक स्वागतयोग्य कदम है, परन्तु इसको लागू करने के लिए समाज के सभी तबकों को ईमानदारी से इसका सम्मान करना होगा। समाज में इन दिनों दिखाना व फिजूल खर्ची बढ़ रही है तथा इसी कारण सामाजिक रीति-रिवाजों का भी हनन हो रहा है। मध्यम वर्ग को इन दिखावें के चक्कर में ज्यादा हानि हो रही है। इन सबको रोकने में यह **आचार संहिता मील का पत्थर** साबित हो सकती है। हम सब मिल कर इसे लागू करें तथा इसकी सबसे बढ़िया शुरुआत सम्मेलन के पदाधिकारी स्वयं अपने घर व परिवार से करें। इसका असर सीधा समाज पर पड़ेगा।

-कमल आलमपुरिया, हैबरगाँव, नगाँव, असम

आपका समाज विकास अंक पढ़ा। मैं तो इतना जानता हूँ कि मैं भारतीय हूँ, हिन्दू हूँ और मारवाड़ी समाज का अंग हूँ। गुण दोष सब धर्मों सब जातियों और सब तरह के वर्गों में है। हमें प्यार से धैर्य से और समझदारी से दूर करने हैं अपने दोषों को।

जो बचपन में सीख लिया, ग्रहण कर लिया और कुछ इरादे बना लिये, वही ही एक मामूली जड़ से विशाल अटूट वृक्ष बन जाते हैं। उसको कोई नहीं हिला सकता। आपको कुछ करना है दिल साफ है और हिम्मत है तो अपना पहले सुधार कीजिये, आत्मचिंतन कीजिये। कहां चूक रहे हैं। जैसे मैंने लिखा आप युवा वर्ग को तिरस्कृत मत कीजिये। निराश मत होइये। प्रयत्न जारी रखिये।

-किशनलाल ईशरवालिया

33/1, नेताजी सुभाष रोड, कोलकाता-700001

सांख का अर्थ है प्रेम पाश

72वाँ स्थापना दिवस विशेषांक मिला। इसमें **वैवाहिक आचार संहिता** छापने के पहले सम्मेलन की सभी शाखाओं को इसकी सूचना भेजकर उनकी सहमति और विचार की माँग करते तो अच्छा होता। मेरे विचार से 'मिलनी सब की 4 रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया' में कागज का रुपया नहीं लिखना चाहिए। 60 वर्ष पहले चाँदी के रुपये चलते थे और मिलनी में 4 रुपये देते भी थे। आज के समय में इतनी मंहगाई बढ़ी है कि कागज के 4 रु० का कोई मूल्य ही नहीं रहा। जो करोड़पति या लखपति या अरबपति हैं क्या वे कागज के 4 रुपये मिलनी देंगे? कभी नहीं राजी होंगे। एक-एक विवाह में उनके यहां लाख-दो लाख-पाँच-दस लाख खर्च होते हैं तो 4 रु० चाँदी के देते हैं तो कौन सा बड़प्पन है—कागज का 4 रुपये देते उन्हें लज्जा आएगी।

दूसरी आपति या मेरा विचार है-पानी से पापड़ तक 25 व्यंजन का नियम लागू हो। आपको लिखना चाहिए लड्डू सहित 5 मीठा और 3 फीका व्यंजन बने। पानी-पापड़-पूरी-साग-दहीबड़ा लिखने की जरूरत नहीं है। 5 मिठाई 3 फीका होने से 25 का आँकड़ा भी नहीं पहुँचेगा।

तीसरा विचार सजनगोष्ठी बन्द हो से है। क्यों जी, इसमें क्या आपत्ति है? रात्रि का भोज लड़की वाले के घर पर होता है- इसमें न तो फिजूल खर्ची है- न अशोभनीय है। इस काम में तो प्रेम बढ़ता है। इस अवसर पर समधी को सांख जलेबी खिलाई जाती है। सांख का अर्थ है प्रेम पाश।

—डा० अरुण भारती

211 पी.एन मालिया रोड, रानीगंज, प. बंगाल

(आपने जो सुझाव दिए वे सभी सुझाव विचार गोष्ठी के समय आये थे, परन्तु साथ ही सर्वसम्मति से आपके इन सुझावों को अस्वीकार कर दिया गया। ध्यान रहे ***''वैवाहिक आचार संहिता''*** *के अन्तर्गत हमने पाठकों के पत्रों को उनकी मूल भावनाओं के साथ ही प्रकाशित करने का निर्णय लिया है ताकि पाठक के मन:स्थिति व प्रतिक्रियाओं को सभी जान सके। -सम्पादक)*

संपादकीय

पत्रकारिता का स्तर

पत्रकारिता का अर्थ था समय पर देश व समाज में हो रही हलचलों को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना, राजनैतिक सूचनाओं से देश को अवगत कराना, साहित्य एवं संस्कृति को इसके माध्यम से मजबूत किया जाना। परन्तु पिछले एक दशक से ऐसा देखा जा रहा है कि विदेशी पत्रकारिता की तर्ज पर भारतीय पत्रकारिता ने भी फिल्मी दृश्यों का चुम्बन शुरू कर दिया। श्याम से रंगीन एवं रंगीन से रंगीनी होने लगी पत्रकारिता। पाठकों को जिस चीज से हम बचाये रखने में समर्थ थे, समाचारों को माध्यम बनाकर जब हम साहित्य एवं संस्कृति की बातें करते, नये लेखक व कवियों को स्थापित करते थे, आज यह परम्परा प्राय लुप्त होती जा रही है। एवं इसको हिंसा, लूट, बलात्कार, सनसनीखेज समाचारों से भरा एवं पाटा जा रहा है। इस श्रेणी में टी. वी. चैनलों के वे समाचार पत्र भी आते हैं जो उपभोक्ता को सबसे ज्यादा गंदगी परोस कर अपनी दुकान चलाने व सबसे तेज चैनल होने का दावा भी ठोकते हैं। समाचारों की सभ्यता इनके चेहरों पर लिखी साफ दिखाई देती है। अश्लीलता को बेचने में कौन कितना तेज है इस बात की बगैर परवाह किये कि इनका कुछ सामाजिक दायित्व है, घर के हर सदस्यों के बीच एक साथ दिखाया जा रहा है। कुछ जिम्मेवारियाँ बनती हैं, इनकी भी। सबके सब नग्नता की हद को छूने की होड़ में लगे हैं। जहाँ हम एक तरफ पत्रकारिता को नग्न किये जा रहे हैं, वहीं यह बात भी झलकने लगी है कि कई समाचार पत्रों ने इस तरह के समाचार को न सिर्फ प्रकाशित करना बन्द कर दिया, इनका यह प्रयास भी सराहनीय है कि पत्र को पारिवारिक बनाने के साथ-साथ बच्चों की विकास की बात भी सोचते हैं। इनके सप्ताहव्यापी संस्करणों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि पत्रकारिता के एक वर्ग ने जहाँ अपना स्तर गिराया है, वहीं दूसरा वर्ग सामाजिक पत्रकारिता का स्थान ग्रहण करने की दौर में काफी आगे निकलता सा प्रतीत हो रहा है। कई पाठकों ने ऐसे समाचार पत्र लेना बन्द सा कर दिया, क्योंकि इनके प्रकाशन की मानसिकता समाज में हीन भावना का संचार करती है, कई बच्चों के आत्महत्या के जिम्मेवार हैं इनके प्रकाशक। जो रोजाना सनसनी सूचना को कई दिनों तक बनाये रख कर बच्चों की मानसिकता के साथ खिलवाड़ करते हैं। ऐसी पत्रकारिता जो समाज की जिम्मेवारियों को पूरा नहीं कर पा रही हो, को स्वत: बन्द होने से कोई नहीं रोक सकता। इसका सबसे बड़ा नुकसान पाठकों को उठाना पड़ेगा। यह वक्त है हमें सोचने का एवं सावधान होकर पुनश्च प्रतियोगिता के साथ-साथ पत्रकारिता के स्तर को बनाये रखने का। 24 घंटे के न्यूज चैनलों ने तो सभी सीमायें तोड़ दी है। कुछ दिनों पहले एक धारावाहिक "इण्डिया मोस्ट वान्ट" की सफलता एवं इसके तर्ज पर तो कुछ चैनलों ने क्राइम से जुड़े धारावाहिक चला रखे हैं। इनके इन प्रयासों को किन शब्दों से निन्दा की जाये यह हमें सोचना पड़ेगा। मीडिया को व्यवसाय इसलिए नहीं बनाया जाये कि वे समाज में अपने व्यवसाय को फैलाने के लिए गन्दगी परोसते रहे। गुप्त कैमरों का प्रयोग मीडिया समाज की व्यवस्था को ठीक करने के लिए करता हो तो उसे सराहा जायेगा। वहीं वह किसी के व्यक्तिगत मामले में दखल देने के उद्देश्य से किसी व्यक्ति के चरित्र को सार्वजनिक उजागर करें यह कदापि उचित नहीं है। मीडिया को अपनी जिम्मेवारी का बोध हो यह जरूरी है कि उन पर अंकुश लगाया जाये। उनके समाचार बेचने के रास्ते पर हमें हस्तक्षेप नहीं है, परन्तु समाचार के नाम पर अश्लीलता, हत्या, लूट, बलात्कार, आत्महत्या, प्रेमकहानी जैसे खुलासा समाचार लोकतंत्र का प्रहरी नहीं हो सकते। हमें सोचना होगा पत्रकारिता में इसका स्थान भी है क्या?

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तर पर छः माह व्यापी प्रस्तावित कार्यक्रमों की घोषणा

अप्रेल-२००७ : सम्मेलन द्वारा पारित **''वैवाहिक आचार संहिता''** का विभिन्न माध्यमों से प्रचार-प्रसार एवं इसके पक्ष में प्रांतीय, जिला एवं गाँव स्तर पर विचार-गोष्ठियों का आयोजन।

मई-२००७ : प्रांतीय स्तर पे मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन। इस संबंध में दिशा-निर्देश एवं सुझाव सभी प्रांतों को भेजे जा रहे हैं।

जून-२००७: आत्म चिन्तन शिविर : प्रांतीय एवं जिला स्तर पर सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं कायकर्त्ताओं के साथ २४ घंटे या ४८ घंटे का अत्म चिंतन शिविर का आयोजन किया जाय जहाँ सम्मेलन की वर्तमान स्थिति एवं भावी दिशा पर खुलकर बातचीत हो एवं भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जा सके। शिविर में साधारण कार्यकर्त्ताओं को अपनी बात कहने का अधिक से अधिक अवसर दिया जाये एवं आलोचना से परहेज नहीं हो।

जुलाई-२००७ : सदस्यता अभियान माह : सम्मेलन को सही मायने में समाज की प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित करने के लिए वर्तमान कार्येकाल में सर्व भारतीय स्तर पर एक लाख नये सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है। सभी के सहयोग से यह संभव है। जुलाई २००७ के महीने को सदस्यता अभियान के रूप में पालित कर अधिक से अधिक प्रांतीय एवं राष्ट्रीय सदस्यों को सम्मेलन से जोड़ना है।

अगस्त-२००७ : समाज सुधार एवं समरसता माह में समाज में गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों पर प्रांतीय, जिला एवं गांव स्तर पर विचार गोष्ठियों का आयोजन करना है जिनमें टूटते परिवार, बढ़ते तलाक, बुजुर्गों के प्रति सम्मान में कमी, बालिका-शिक्षा, आदि विषयों पर सार्थक बातचीत हो।

सितम्बर-२००७ : समाज की बदलती नयी तस्वीर को हमें प्रस्तुत एवं उजागर करना है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत समाज के किसी भी व्यक्ति द्वारा शिक्षा, संस्कृति, ज्ञान, विज्ञान, खेलकूद, नाटक या अन्य किसी विधा में प्राप्त सफलता के लिए उनका सार्वजनिक सम्मान करना। सम्मान समारोह में समाज के व्यक्तियों के साथ-साथ स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आमंत्रित करना।

विशेष : व्यवसाय एवं उद्योग के क्षेत्र में समाज के युवाओं को भी प्रोत्साहित एवं प्रशिक्षित करना है। इसके लिए सम्मेलन ने उद्यमी प्रशिक्षण कार्यक्रम हाथ में लिया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत समाज के सफल उद्योगपति युवा उद्यमियों को प्रशिक्षण देंगे। इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर कार्यान्वित करना है।

राजनैतिक चेतना अभियान

पश्चिम बंगाल मारवाड़ी राजनैतिक कायकर्त्ता अप्रैल में

सम्मेलन के सभापति श्री सीताराम जी शर्मा ने राष्ट्रीय अधिवेशन में दिये अपने अभिभाषण में समाज में राजनैतिक चेतना जागृत करने की अपील करते हुए **''कोषाध्यक्ष नहीं अध्यक्ष बने''** का नारा दिया था। इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए कार्यकारिणी समिति ने एक राजनैतिक चेतना उप-समिति का गठन किया है जिसकी प्रथम बैठक गत १४ जनवरी २००७ को उपसमिति के **चेयरमैन श्री जुगल किशोर जैथलिया** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

उक्त बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिये गये हैं :-

१. **प्रत्येक प्रांतीय सम्मेलन एक राजनैतिक चेतना उप-समिति का गठन करे।**

२. **प्रांतीय सम्मेलनों द्वारा ३० जून २००७ के भीतर राज्य स्तर पर एक दिवसीय ''मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन'' का आयोजन किया जाये।**

इस कड़ी में ''पश्चिम बंगाल मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन'' का आयोजन आगामी १५ अप्रैल २००७ को कोलकाता में आयोजित करने का निर्णय लिया गया है।

३. इन सम्मेलनों में प्रांत से सभी भूतपूर्व एवं वर्तमान सांसदों, विधायकों एवं पार्षदों के साथ-साथ मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रांतीय एवं जिला स्तर के पदाधिकारियों को आमंत्रित किया जायेगा।

४. महिलाओं को विशेष रूप से प्रोत्साहित कर आमंत्रित किया जायेगा।

इस संबंध में अधिक जानकारी एवं सहयोग के लिए उपसमिति के **चेयरमैन श्री जुगलकिशोर जैथलिया** या **संयोजक श्री नारायण प्रसाद जैन** से सम्मेलन कार्यालय के पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रांतीय स्तर पर मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलनों के पश्चात इस वर्ष के अन्त तक दिल्ली में एक राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन करने का कार्यक्रम है। विभिन्न प्रांतों द्वारा संकलित राजनैतिक कार्यकर्त्ता की सूची के आधार पर सभी को दिल्ली आमंत्रित किया जायेगा।

श्री जैथलिया ने सम्मेलन सभापति श्री शर्मा को इस कार्यक्रम की सोच एवं प्रस्ताव के लिए साधुवाद दिया। संयोजक श्री जैन ने बैठक का संचालन किया। बैठक में श्री सांवरमल भीमसरिया (पूर्व पार्षद), संयुक्त महामंत्री श्री अरुण गुप्ता, श्री ओमप्रकाश पोद्दार, अध्यक्ष कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन एवं पूर्व पार्षद तथा श्री बंसीलाल बाहेती कार्यकारिणी सदस्य ने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये।

उक्त बैठक में सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा एवं महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार भी उपस्थित थे।

उससमिति ने महामंत्री श्री पोद्दार से अनुरोध किया कि वे इस कार्यक्रम के संबंध में जानकारी अन्य सभी प्रांतों को प्रेषित करने की कृपा करें।

विवाह में सादगी बरतें।

अध्यक्षीय

२८ फरवरी २००७

बहनों एवं भाईयों,

फरवरी माह वर्ष का महत्वपूर्ण माह होता है, इसी माह में देश का बजट भी पेश किया जाता है, साथ-साथ ही सभी लोग मार्च माह की तैयारी में लग जाते हैं, चूँकि वित्तीय संतुलन की तैयारी आप सभी को भी करनी है।

सम्मेलन ने भी अगले छः माह व्यापी कार्यक्रमों की घोषणा की है प्रान्तीय स्तर पर आप सभी को इसकी सूचना अलग से भी भेजी जा रही है। हमारा यह प्रयास रहेगा कि आप सभी के सहयोग से प्रस्तावित छः माह व्यापी कार्यक्रमों को पूर्ण सफलता मिलेगी। हमारा आप सभी से विनम्र निवेदन भी है कि आप छः माह के कार्यक्रमों की रूपरेखा विस्तार से बनायें, उसकी एक प्रति हमें भी भेजें, हमारा कोई सहयोग हो तो फोन से भी सम्पर्क करें। सभी कार्यक्रमों का अपना एक महत्व है।

प्रान्तीय स्तर पे मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन के लिए समिति की घोषणा करें। अपने-अपने प्रान्तों से समस्त छोटे-बड़े कद के राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को सूची तैयार करें, उनके सुझाव आमंत्रित करें। इसकी जानकारी केन्द्रीय समिति को भी दें। आप सबके प्रयास से हम एक वृहद DATA BANK तैयार कर पायेंगे। ताकि इस वर्ष के अन्त तक हम सब मिलकर चुने हुए राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं का दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर एक सम्मेलन का आयोजन कर सकेंगे।

उपरोक्त सभी कार्यक्रम समाज की लम्बी माँग को ध्यान में रख कर लिया गया है। पश्चिम बंगाल में आगामी 15 अप्रेल को कोलकाता में यह कार्यक्रम लेने का निर्णय लिया गया है, जिसका संचालन राष्ट्रीय कार्यालय से किया जा रहा है, आपकी जानकारी में यदि कोई कार्यकर्त्ता जो बंगाल के आस-पास हैं, कि सूचना भेजने की कृपा भी करेंगे ताकि हम उन्हें अपना निमंत्रण भेज सकें।

हमारा यह प्रयास रहेगा कि आपके माध्यम से हम छोटे से छोटे कार्यकर्त्ताओं तक अगले एक-दो माह में पहुँच जाएं। मैं यह जानता हूं कि आपका व्यस्त माह होगा, फिर भी इस ओर आपका ध्यान हम सबके लक्ष्य को साकार करने में पूर्ण सहयोगी रहेगा।

इस बार का **समाज विकास** अपने परम्परागत लीक से हट कर '**होली विशेषांक**' के रूप में प्रकाशित किया गया है। सम्भवतः कुछ के नाम छूट गए होंगे। हमने भरसक प्रयास किया है कि अधिक से अधिक लोगों को होली की उपाधि वितरित की जाए। यदि कहीं त्रुटि हो तो हमें जानकारी देंगे।

होली की शुभ कामनाओं के साथ।

आपका

सीताराम शर्मा

(सीताराम शर्मा)

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

....ताकि आपका सामाजिक सरोकार परिलक्षित हो

राम अवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री

मारवाड़ी समाज की दिशा और दशा को लेकर ज़ब व्यापक रूप से चर्चा-परिचर्चा हो रही है, सामाजिक संस्थाएं इस समाज के भविष्य को लेकर चिन्तित हैं एवं समग्र मारवाड़ी समाज के संचालन के लिए निर्दिष्ट आचार-संहिता का प्रारूप तैयार किया जा रहा है, ऐसे में मुट्ठी भर लोगों द्वारा समग्र समाज की भावना से खिलवाड़ टकराव की स्थिति पैदा कर रही है।

मूलत: व्यापार-वाणिज्य के माध्यम से जीविकोपार्जन करने वाले मारवाड़ी समाज के एक छोटे से धनाढ्य और प्रभावशाली वर्ग ने धन के दम पर यह भ्रम पाल लिया है कि वे सामाजिक आचार-संहिता के पालन को बाध्य नहीं है अपितु अपने मन मुताबिक नयी व्यवस्थाओं का ईजाद करने को स्वतंत्र है। लगामहीन होता जा रहा यह वर्ग अपने धन का प्रदर्शन इस तरह कर रहा है कि वह मारवाड़ी समाज के बड़े वर्ग को हीनभावना का शिकार तो बना ही रहा है, इतर समाजों की दृष्टि में मारवाड़ी समाज की गलत छवि भी पेश कर रहा है।

किसी भी समाज के सुसंगठित और सुव्यवस्थित रहने के लिए जरूरी है कि उस समाज के सभी धड़ों के बीच सामंजस्य हों और कोई भी धड़ा ऐसा कुछ न करे जो दूसरे धड़ों की अस्तित्वहीनता का सबब बन जाए। समाज के धड़ों के बीच वैषम्य वैमनस्य की स्थिति पैदा करती है जो एक न एक दिन अराजकता को जन्म देती है।

मारवाड़ी समाज में वैषन्य और वैमनस्य की यह स्थिति पहले नहीं थी हालांकि पहले भी इस समाज में धन्नासेठ थे और मध्यमवर्गीय तथा गरीब भी। लेकिन उस समय सभी वर्ग एक आचार-संहिता के तहत काम करते थे। सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने से समाज से बहिष्कृत हो जाने का खतरा बना रहता था इसलिए कोई भी समाज के खिलाफ बगावत करने की हिम्मत नहीं करता था।

बीसवीं सदी के शुरुआत में मारवाड़ी समाज में सुधार की जो मुहिम चली और कालांतर में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अगुवाई में राष्ट्रीय स्तर पर समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों को खत्म कर नई सोच से लैस आधुनिक समाज बनाने का जो प्रयास शुरू हुआ उससे इस समाज में एक नई चेतना जगी। एक ओर सामाजिक समारोहों में धन की फिजूलखर्जी, दिखावा, प्रदर्शन, आडम्बर को काफी हद तक रोकना संभव हुआ तो दूसरी ओर समाज के विभिन्न धड़ों के बीच विषमता की खाई को पटाने में सफलता मिली।

1970 के दशक में मारवाड़ी समाज में पनपे नवधनाढ्यों ने सामाजिक आचार-संहिता के विरुद्ध अपनी मर्जी से धन के अपव्यय का जो खेल शुरू किया वह सक्षम प्रतिकार, प्रतिरोध के अभाव में प्रचलित हो गया और आज उसकी चरम परिणति हम देख रहे हैं। राजनीतिक व्यक्तित्वों को अपने आयोजनों में आमंत्रित कर अपना रुतबा दिखाने का एक नया खेल भी शुरू हुआ है।

एक और जहां परंपरागत व्यवसाय से जुड़े लोगों की स्थिति दिन-ब-दिन खराब होती जा रही है, प्रतियोगिता के बाजार में नई तकनीकों और नये उत्पादों का बोलबाला है, सामूहिक उद्यम के स्रोत खत्म हो रहे हैं वहां इस प्रकार धन के अपव्यय का खेल कब तक चलने वाला है ? यह भी किसी से छिपा नहीं है कि खर्च की यह रकम कहां से आती है ? पिछले वर्षों में करोड़ों की शादी के बाद व्यवसायिक असंतुलन के कारण बाजार, वित्तीय संस्थानों और परिजनों का रुपया न लौटा पाने की स्थिति में दिवालिया घोषित करने की सैकड़ों वारदातें हुई।

कमाना बुरी बात नहीं है और खर्च करना भी बुरा नहीं है मगर कमाने और खर्च करने में हमेशा इस बात का ख्याल होना चाहिए कि कहीं यह अपनी और समाज की अस्मिता को ताक पर रख कर तो नहीं किया जा रहा ?

आप चाहे जो भी हो जाए समाज के साथ ही आपकी गणना होती है इसलिए अपने उत्थान के साथ समाज के उत्थान का प्रयास आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए।

मेरा यह मानना है कि सामाजिक समारोहों में खर्च किये जाने वाले रकम का एक निश्चित प्रतिशत सामाजिक संस्थाओं को अनुदान में देने का रिवाज पुन: शुरू होना चाहिए ताकि आयोजन की सफलता के साथ-साथ सामाजिक संस्थाओं की गतिविधियां भी सुचारू रूप से चल सके और व्यापक समाज उससे लाभान्वित हो। मसलन् शादी चाहे लड़के की हो या लड़की की, विवाह की रजत जयन्ती हो या स्वर्ण जयन्ती या कि जन्मदिन की पार्टी हो अगर इस उपलक्ष्य में सामाजिक संस्थानों, अस्पतालों, दातव्य चिकित्सालकों, विद्यालयों, अनाथलायों को दान दिया जाय, भूखों को खाना खिलाया जाये तो न सिर्फ धन की उपादेयता बढ़ जाती है बल्कि एक मानसिक सन्तुष्टि भी मिलती है जिसका जीवन में बहुत महत्व होता है।

आइए, हम धन के व्यर्थ प्रदर्शन को रोकें और उसके सार्थक उपयोग की पहल करें ताकि और समाज का नाम लोग सम्मान और श्रद्धा से ले। ●

विवाह में सादगी बरतें।

यत्र नारियस्तु पूज्यन्ते

मोहनलाल तुलस्यान

नारी सृष्टि सृजन का आधार ममता की प्रतिमूर्ति, शक्ति का स्वरूप, गृहस्थी के झूले की दूसरी डोर, पुरुष की सहचरी, जो एक आँगन के पालने से निकलकर डोली में बैठकर दूसरे आँगन में जाती है और फिर वहीं की होकर रह जाती है/ लेकिन वही नारी जब बेटी के रूप में जन्म लेती है, तो माँ-बाप के चेहरे पर चिन्ता की लकीर खिंच जाती हैं। कई माँओं की तो सदमे से मृत्यु तक हो जाती है। वहीं इसके विपरीत यदि बेटा होता है, तो घर आँगन में उत्सव जैसा माहौल बन जाता है। मिठाईयां बाँटी जाती है :पटाखे फूटते हैं, लेकिन बेटी का नाम आते ही फिर वही मायूसी! ऐसा क्यो?

क्योंकि कुछ लोग आजकल बेटों को पोस्टडेटेड चेक समझने लगे हैं/वे इस फिराक में रहते हैं कि कब कोई पैसे वाला इनके हाथ लग जाय और ये उसका भरपूर आर्थिक दोहन कर लें। अगर अनुनय-विनय भी किया तो उसे अपने सामाजिक प्रतिष्ठा का वास्ता दिया जाता है। अजीब बात है! ज्यादा दहेज लेने का भला इनकी प्रतिष्ठा से क्या सम्पर्क? लेकिन लने वालों को तो सिर्फ बहाना चाहिए। इनका एक वर्ग और भी है, जिनके घर में एक बेटा व एक बेटी है। वे लोग बेटे की ससुराल से दहेज तो लेना चाहते हैं मगर बेटी की बात आने से ही ये दहेज उन्मूलन का दु:खड़ा रोना शुरू कर देते हैं, बात चाहे जो भी हो पर नुकसान ज्यादा लड़की को ही सहना पड़ता है। यानि ज्यादा दहेज लाने पर भी कुछ कमी निकाल कर ताने-उलहने देना/और कम दहेज लाने पर तो सभी जानते हैं कि क्या होता है?

अतीत में झांकने से पता चलता है कि मिथिला नरेश महाराज जनक ने अपनी सुपुत्री सीता को उपहार के रूप में अपार स्वर्ण चाँदी हाथी-घोड़े-नौकर-चाकर उनकी सुविधा के लिए दिया था/लेकिन जनक जी ने कभी शायद सोचा भी न होगा कि मेरी यही सुविधा कल ढेर सारे लोगों के लिए असुविधा बन जायेंगी/वेदों में उल्लेख है कि वधू घर आते समय अपने साथ जो उपहार पिता द्वारा प्राप्त कर लाती थी न केवल उस पर अपितु आशीर्वाद स्वरूप ससुर द्वारा-मिले उपहार पर भी उसी का अधिकार होता था/इसी लिए उसे गृहलक्ष्मी सम्बोधित किया जाता था/राज लक्ष्मी के रूप में उसका स्वागत होता था/गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में सीता, माण्डली, उर्मिला श्रुतिकीर्ति के वधू बनकर गृह प्रवेश करने पर दशरथ जी द्वारा- कौशल्या, कैकेई व सुमिता को कही हुई बात का बड़ा ही मार्मिक चित्रण करते हुए लिखा है कि-

''वधू लरकिनी पर घर आयी, राखेहु नयन पलक की नाई''

अर्थात, जैसे पलके आँखों की रक्षा करती है, उसी तरह नारी के गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने पर पारिवारिक मर्यादा, सामाजिक प्रतिष्ठा, पवित्र संस्कारों की रक्षा करने का दायित्व सम्भालती है। हमारी संस्कृति की चिरन्तता का आधार नारी ही है। तभी तो कहा गया है :-

यत्र नारियस्तु पूज्यन्ते-रमन्ते तत्र देवता।

समय बदला-परिस्थितियाँ बदली लेकिन कुप्रथायें ज्यों की त्यों ही रह गयीं। आज समाज आधुनिकता का लबादा ओढ़ कर भ्रमित हुआ जा रहा है। विवाह समारोहों में धूमधाम वैदिक काल से ही होती आ रही है। उस समय पवित्र संगीत व मंगल गीत होते थे परन्तु आज आधुनिकता का नशा न केवल विवाह समारोहों में अनावश्यक फिजूल खर्ची करवा रहा है, बल्कि पवित्र संगीत व मंगल गीतों की जगह राक-एन-राल की धुन पर अश्लील व फूहड़ गीतों के साथ घर को बालिकाओं एवं बधुओं को नृत्य के नाम पर उत्तेजक मुद्राओं में थिरकने की पराकाष्ठा तक पहुंचा दिया है। आधुनिकता के दम्भ में समाज इतना पाषाण हृदय हो गया है कि कन्याभ्रूण हत्या, दहेज के लिए वधु दहन, तलाक के नाम पर वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेद जैसे कृत्यों से भी नहीं झिझकता। इसका एक दुखद पहलू यह भी है कि इनके इसी कृत्य के कारण आज हमारे समाज में बालिकाओं की संख्या में निरन्तर गिरावट दर्ज की जा रही है। जाहिर है कि यदि हमने समय रहते इस पर चिन्तन मनन कर प्रभावी कदम नहीं उठाया तो आगत समय में समाज को ऐसे पापकर्मों की भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

●

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

अमृतवाणी

किस दिशा में जा रहा है हमारा लोकतंत्र ?

आचार्य महाप्रज्ञ

छातों के उफनते हुए, असंतोष ने लोकतंत्र को चुनौती दी है। ठीक वैसे ही जैसे उफनता दूध अग्नि को चुनौती देता है। इस उफान का शमन किया जा सके तो दूध भी उबर सकता है और अग्नि भी, अन्यथा दोनों का भला नहीं है। इस उफान के नीचे एक ताप है। विषमता के ईंधन अब इतने प्रज्वलित हो उठे हैं कि केवल दूध में जल की दो-चार बूंदे डालना पर्याप्त नहीं है। ईंधनों पर जल डालना भी आवश्यक हो गया है।

एक जमाना था, जब कुछेक लोग शिक्षित होते थे। शिक्षित लोग अशिक्षित जनता पर शासन किया करते थे। आज का जमाना उससे भिन्न है। आज हर व्यक्ति को शिक्षित होने की सुविधा है। शिक्षित जनता अशिक्षित जनता की भांति शासन या जीवन-पद्धति को स्वीकार नहीं कर सकती। विषमता प्राचीन काल में थी पर वह असहय नहीं थी। उस समय का अभिजात वर्ग ऐश्वर्य को अपने कर्म का फल मानता था तो निम्न वर्ग गरीबी को अपने कर्म का फल मानता था। दोनों के अपने-अपने मूल्य थे। इसलिए असंतोष नहीं था। वर्तमान में भी वर्ग है पर उनके सामने अपना-अपना निश्चित मूल्य नहीं है। इस मूल्यहीनता की स्थिति में से ही असंतोष उफन रहा है। लोकतंत्र की आत्मा धूमिल हो रही है। जिस दिन लोकतंत्र के मूल्य स्थापित और स्थित हो जाएंगे, उसी दिन वास्तविक लोकतंत्र का उदय होगा। अभी अभी हिंदुस्तान विकल्पसिद्ध (पूर्व मान्यतासिद्ध) लोकतंत्र की स्थिति में चल रहा है। केवल हिंदुस्तान ही नहीं, दुनिया के सभी लोकतंत्र इसी स्थिति में चल रहे हैं। वास्तविक लोकतंत्र यह हो सकता है, जहां लोकतंत्र का मूल्य व्यक्ति, व्यक्ति का मूल्य स्वतंत्रता और स्वतंत्रता का मूल्य समानता हो।

आधुनिक युग का चिंतन लोकतंत्र की दिशा में प्रवाहित नहीं हो रहा है। परिस्थिति के परिवर्तन पर अतिरिक्त बल दिया जा रहा है। व्यक्ति परिवर्तन का विचार उसके सामने अकिंचन, सा हो गया है। लोकतंत्र की दिशा यह है कि व्यक्ति के पीछे परिस्थिति बदले, परिस्थिति के पीछे व्यक्ति बदले, यह परतंत्रता अर्थात अधिनायक तंत्र की दिसा है। वर्तमान युग इसी दिशा बोध में प्रवाहित है, इसलिए आज आदमी उतना ही बदला, जितनी परिस्थिति बदली है। आधुनिक मनुष्य जा रहा है अधिनायकतंत्र की ओर। यह अंतविरोध इस युग की सबसे बड़ी दुर्घटना है।

मतदान की पद्धति, मतदान और बहुमत प्राप्त को सत्तारूढ़ होना-यदि यही लोकतंत्र हो तो इसका अभिनय कहीं भी किया जा सकता है। यह मात्र उसकी परिधि है। इसका केंद्र है व्यक्ति, जिसे परिस्थिति परिवर्तन में स्रष्टा की भूमिका प्राप्त है। आज आदमी-आदमी में कितना भेदभाव है। क्या नीग्रो लोगों के प्रति अमेरिकनों के मन में, अफ्रीकियों के प्रति गोरों के मन में तथा हरिजनों के प्रति सवर्णों के मन में समानता का भाव है ? अभिजात वर्ग के मन में गरीबों के प्रति सहानुभूति का भाव नहीं है। अभाव पीड़ित लोगों के प्रति संपन्न लोगों के मन में सहयोग का भाव नहीं। मानवीय एकता बाहरी आवरणों से आवृत है और उसकी पहचान भी सुलभ नहीं है। इस स्थिति में चुनाव की प्रक्रियासमारोपित प्रक्रिया है। इस व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना द्वारा स्वीकृत नहीं कहा जा सकता है।

जिस व्यक्ति के मन में लोकतंत्र की पहली किरण फुटी, वह बंधन के परिणामों को भुगतकर मुक्ति पाना चाहता था। जिस व्यक्ति के मन में लोकतंत्र की पहली धारा वहीं, यह हिंसा के परिणामों को अनुभव कर अहिंसा की प्रतिष्ठापना करना चाहता था। मुक्ति और अहिंसा इन दो रासायनिक द्रव्यों के घोल का नाम ही लोकतंत्र है, इसलिए वह स्वतंत्रता और समानता के दर्पण में अपने-आपको प्रतिबिंबित करना चाहता है। इस सच्चाई को हम आज समझे या अगली पीढ़ी के लिए छोड़ दें कि बंधनों का जाल बिछा और विषमता का ब्यूह रचकर लोकतंत्र की स्थापना नहीं की जा सकती और बहुत वर्षों तक चुनाव में सींच-सींच कर उनकी पौध को जीवित नहीं रखा जा सकता। केवल वे ही हाथ लोकतंत्र के बुझते दीप में प्राण भर सकते हैं, जो अपनी पतंग की डोर अपने आप थामे हुए हैं और जो स्वतंत्रता की पवित्र वेदी पर समानता की प्रतिष्ठा करने को प्राणपथ से जुटे हुए हैं। ●

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

सर्च के दौरान पायी गयी ज्वेलरी व अन्य संपत्तियों पर टैक्स

श्री नारायण जैन, इनकम टैक्स एडवोकेट

(श्री नारायण जैन को प्रत्येक माह आयकर संबंधी विभिन्न विषयों पर समाज विकास में लिखने के लिए आमंत्रित किया गया है। -संपादक)

सर्च के दौरान पायी गयी ज्वेलरी का ब्यौरा टैक्स रिटर्न के साथ दाखिल वेल्युशन रिपोर्ट से भिन्न हो या परिवार की कुछ महिलाओं की इनकन टैक्स या वेल्थ टैक्स की फाइल नहीं है ऐसे में ज्वेलरी की जब्ती किस आधार पर होगी। इस संदर्भ में केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड द्वारा दिये गये निर्देश सं. 1916 दिनांक 11.5.94 का सार इस प्रकार है-

1. **यदि किसी व्यक्ति द्वारा धन कर का भुगतान किया जाता है तो सोने के घोषित आभूषणों के वजन तक ज्वेलरी जब्त नहीं की जायेगी। सिर्फ उससे अधिक मात्रा में पायी गयी ज्वेलरी जब्त की जायेगी।**

2. **यदि किसी व्यक्ति का धन कर के तहत कर निर्धारण न होता हो तो शादीशुदा औरत की स्थिति में 500 ग्राम सोने के आभूषण, तथा पुरुषों के मामले में 100 ग्राम प्रति व्यक्ति तक ज्वेलरी जब्त नहीं की जायेगी।**

3. सर्च पर गये अधिकारी उस व्यक्ति के परिवार की स्थिति, रीति, रिवाज, उस समुदाय में जारी प्रचलन आदि के मद्देनजर ज्वेलरी की अधिक मात्रा होने पर भी उचित समझने पर जब्त नहीं करने का निर्णय ले सकती है लेकिन ऐसे अधिकारी द्वारा आयकर निदेशक या आयुक्त को दी जाने वाली सर्च रिपोर्ट में ऐसे तथ्य का उल्लेख करना होगा।

4. सभी मामलों में सर्च के दौरान पायी गयी ज्वेलरी की विस्तृत रपट तैयार की जानी चाहिए जो कर निर्धारण के समय काम में ली जा सके। उपरोक्त संदर्भ में करदाताओं को सुझाव है कि सर्च के दौरान अपने बयान में यह इंगित करे कि विभिन्न ज्वेलरी परिवार के किस किस सदस्य की है।

कई वर्ष पूर्व हासिल की गयी ज्वेलरी : यदि एक करदाता की पत्नी फरवरी, 1988 में अपने विवाह के अवसर पर ज्वेलरी प्राप्त करती है और ऐसी ज्वेलरी अघोषित है तो क्या फरवरी 1988 में उन आभूषण के मूल्य के आधार पर कर का भुगतान करना होगा? इन ज्वेलरी के खरीद का प्रमाण पत्र भी नहीं है, ऐसे में कर निर्धारण अधिकारी को कैसे संतुष्ट किया जाये? ज्वेलरी अथवा किसी भी सम्पत्ति पर जो कि अघोषित है, कर लगाने का अधिकार निश्चय ही उसे प्राप्त करने के साथ-उसका मूल्य होना चाहिए। इसलिए यदि करदाता यह सिद्ध कर सकता है कि वह ज्वेलरी फरवरी 1988 में प्राप्त की गयी थी तो कर निर्धारण अधिकारी द्वारा उस समय के मूल्य के आधार पर न की तलाशी के तारीख वाले अघोषित आय का आंकलन करना चाहिए। यह बात ध्यान देने की है कि तलाशी के कर निर्धारण के लिए धारा 68, 69, 69ए, 69बी और 69सी के नियम भी लागू होंगे। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी धाराओं में स्पष्ट है कि इनके नियम किसी करदाता के मामले में तभी लागू होंगे जब वह किसी सम्पत्ति के स्रोत अथवा प्रकृति के बारे में कोई स्पष्टीकरण कर निर्धारण अधिकारी की राय में संतोषजनक नहीं है, इसलिए यदि एक उचित स्पष्टीकरण दिया गया है कि वह कोई कारण नहीं है कि कर निर्धारण अधिकारी विवाह के समय प्राप्त ज्वेलरी का मूल्य स्वीकार न करे। विवाह की फोटो या वीडियो रिकार्डिंग, जिसमें दुल्हन ने यह ज्वेलरी पहन रखी है या उसे ज्वेलरी उपहार में दिये जा रहे हैं यह सिद्ध करने के लिए अच्छा सबूत हो सकता है कि ज्वेलरी विवाह पर प्राप्त हुई थी, परन्तु सुविधा के लिए इस बात की जानकारी दी जाती है कि सर्च के समय धारा 132 (40) के अधीन बयान देते समय यह बता दिया जाता है कि यह ज्वेलरी विवाह के समय या अन्य किसी अवसर पर प्राप्त हुई थी। ऐसे अवसरों की तारीख या वर्ष भी बताना चाहिए। ब्लाक अवधि का रिटर्न जमा करते समय अघोषित ज्वेलरी का मूल्य किस वर्ष में यह प्राप्त हुई हो, तब का लेना चाहिए। परन्तु यदि बयान या सबूतों में विरोधाभास पाया जाये तो कर निर्धारण अधिकारी करदाता द्वारा दिया गया बयान नामंजूर कर सकता है। यदि किसी व्यक्ति के पास अघोषित ज्वेलरी का बिल है तो कर निर्धारण अधिकारी की संतुष्टि के लिए पेश करना उचित होगा। इसी तरह स्वर्णकार ज्वेलरी को फिर से बनाने की रसीद या किसी रजिस्टर्ड,वेल्यूअर की पुरानी वेल्यूशन रिपोर्ट भी सबूत के तौर पर पेश की जा सकती है। यदि सर्च के दौरान ज्वेलरी का मूल्य आयकर विभाग का मूल्य आंकने वाला अत्यधिक आंकता है ऐसे में करदाता को धारा 132 (4) के अधीन अपने बयान में यह बतलाना चाहिए कि ऐसा मूल्य अत्यधिक है, अपनी दलील के पक्ष में यदि संभव हो तो किसी अन्य पंजीकृत मूल्य आंकने वाले का लिखा हुआ मूल्यांकन प्रस्तुत करना चाहिए। कर निर्धारण की कार्यवाही में उसे दोहराना चाहिए। करदाता कर निर्धारण अधिकारी या आयकर आयुक्त से ज्वेलरी का अन्य किसी मूल्य आंकने वाले से दुबारा मूल्यांकन करवाने की विनती कर सकता है, किन्तु दुबारा मूल्यांकन कराने का खर्चा करदाता को देना होगा।

शेयरों में अघोषित निवेश : सर्च के दौरान कुछ ऐसे स्क्रीप्ट पाये गये हों जिनकी खरीद का कोई सबूत उपलब्ध नहीं है। ऐसे में विनियोजन की राशि का निर्धारण उस मामले से संबंधित परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

उदाहरण के लिए यदि वे शेयर जिस व्यक्ति के मामले में सर्च हुई हो उसी के नाम में है तो जिस तारीख को उसके नाम शयेर हस्तांतरित किये गये हैं उस तारीख के मूल्य के आधार पर उनका मूल्य निर्धारित किया जा सकता है। यह मानते हुए कि उसके अलावा और कोई सबूत नहीं है। अन्य स्थिति यह भी हो सकती है कि वे शयेर उस व्यक्ति के नाम में ही सीधी अर्जी देने पर कम्पनी ने आवंटित किये जाने की तारीख तथा मूल रकम जिस पर कम्पनी ने शेयर जारी किये थे उनके आधार पर मान सकते हैं। शेयर आवंटित किये जाने की तारीख शेयर सर्टिफिकेट में ही पता चल सकता है और जरूरत हो तो कर निर्धारण अधिकारी शेयर जारी करने वाली कम्पनियों से भी आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकता है। यदि शेयर प्रमाण पत्र ट्रान्सफर डीड के साथ पाये गये हों और उसका हस्तांतरण करदाता के नाम में नहीं हुआ है तो ट्रांसफर डीड के पीछे ब्रोकर की मुहर की तारीख पर विचार किया जा सकता है। यदि भुगतान चेक द्वारा किया गया हो तो भुगतान की तारीख जब्त किये शेयरों के लिए विचारणीय हो सकती है। कर निर्धारण अधिकारी करदाता के शेयर ब्रोकर से तथा बैंक से भी हासिल कर सकता है। शेयर डीमेट अकाउण्ट में रखे गये हों तो संबंधित बैंक से विवरण लेकर उस शेयर होल्डर के फोलियो के बारे में कम्पनी को लिखकर आयकर विभाग द्वारा जानकारी ली जा सकती है कि उस व्यक्ति के नाम से शेयर कब से है। ●

सत्संग

बेटे के नाम, पत्र पिता का

मेरे प्यारे बेटे,

एक कहावत है, तुम मुझे अपने दोस्तों के नाम बहताओ तो मैं बताऊंगा कि तुम कैसे आदमी हो ? दुनिया में हर जगह बुरे को दोस्त बनाने वाला बुरा ही समझा जाता है। वह भी समझा जाता है कि जिसका दोस्त धूर्त, दुष्ट, चालबाज या धोखेबाज है तो वह भी जरूर कोई गलत काम करता होगा और दूसरों से छिपाता होगा। जाहिर है, ऐसे लोगों को दोस्त बनाना खतरनाक है, पर उन्हें दुश्मन बनाना भी कम खतरनाक नहीं। मैं चाहूँगा कि तुम ऐसे लोगों से बचो, पर ऐसा नहीं लगे कि तुम उनसे कन्नी काट रहे हो। ऐसा लगेगा तो वे तुमसे नाराज होकर तुम्हें हानि पहुंचायेंगे। इसलिए न तो झगड़ा करो, न दोस्ती, तटस्त रहो। न प्रशंसा करो न बुराई। सही तरीका तो वही है, जो संतों ने बताया है कि बुराई से घृणा करो, बुरे से नहीं। सबसे रिजर्व्ड रहो। अपने को बचाकर रखो और ऐसा भी नहीं लगे कि तुम उनसे बच रहे हो। नहीं तो तुम भी असामाजिक घोषित कर दिए जाओगे। पेर खतरा बहुत अधिक सामाजिक हो जाने में भी है। जीवन में तुम्हें ऐसे लोग मिल जाएंगे, जो बड़ी से बड़ी बात पर भी चुप्पी साध लेते हैं। दूसरे वे हैं, जो मामूली बात का भी बतंगड़ बनाकर हल्ला मचाते हैं। इन दोनों प्रकार के लोगों से बचो।

बात को आगे बढ़ाने के पहले, आओ यह समझ लें कि तुम्हारी आयु के अधिकांश बच्चे यही समझते हैं कि स्पष्टवादी होना एक अच्छी निशानी है। किसी को अपना मित्र बनाने से पहले यदि तुम इतने स्पष्टवादी हो गए हो कि उसकी कमियों को आलोचना करने लगे तो समझो दुनिया में कोई भी तुम्हारा मित्र नहीं बन पाएगा। साफगोई ठीक है, पर बहुत सावधानी चाहिए। सच्ची दोस्ती की दुहाई देने वाले तुम्हें जाने कितने-कितने मित्र मिलेंगे, जो वास्तव में धूर्त और चालाक होंगे। उन्हें पहचानना कठिन है, पर ऐसा भी नहीं है कि तुम उन्हें भांप भी नहीं सकते। यह गुण हर व्यक्ति में होता है। तुम्हारे अपने अंदर भी है। सच्ची दोस्ती हृदय से उपजती है और हृदय ही उसे अनुभव भी करता है। कोई कहे कि मैं तुम्हारा दोस्त हूँ और तुम उस पर तुरंत विश्वास कर लो तो धोखा खा जाओगे। ऐसे लोगों से नरमी, किंतु अविश्वास के साथ पेश आओ। न तो उन्हें अपने भरोसे में लो और न ही उन्हें अपनी कोई गोपनीय बात कहो।

एक प्रकार की दोस्ती और भी होती है, एक ही तरह के नाम और दिलचस्पी रखने वालों को बीच। ऐसी दोस्ती में शुरुशुरु में तो काफी गरमी होती है, पर धीरे-धीरे ठंढी पड़ जाती है, जैसे चोरों, ठगों और बदमाशों के बीच की दोस्ती। काम पूरा हुआ और एक-दूसरे के जानी दुश्मन बन बैठे।

कहावत है, दोस्ती बराबर वालों से ही करनी चाहिए। इस कहावत को बस आधा सच मान कर चलो। बाकी आधा सच यह है कि दोस्ती अपने से बड़ों से ही करनी चाहिए। बड़ों का मतलब उनसे नहीं, जो जन्म से बड़े हैं, बल्कि उनसे है, जो अपने कार्य से बड़े हुए हैं। उनसे मिलोगे और दोस्ती करोगे तो उनकी ऊंचाइयों को भी छूने का प्रयास करोगे। जैसे तुम्हारे मित्र होंगे, वैसे तुम भी होगे। बड़ों को पहचानना कठिन नहीं। सारा समाज उन्हें जानता और मानता है। अच्चे लोगों की जांच किसी परखनली में नहीं होती। सामान्य समझदारी हो तो मालूम हो जाता है कि वे कौन है, कैसे हैं ? पर याद रखो संसार में अनेक ऐसे भी है, जो चापलूसी और ढिठाई के बल पर लोगों के बीच घुसे हुए होते हैं। अक्सर उनके ऊपर किसी बड़े आदमी की छत्रछाया होती है। इनसे घबड़ाने की आवश्यकता नहीं है। भ्रष्ट और निकम्मे लोगों की कलई खुलते कितनी देर लगती है ? अच्छे लोगों के व्यवहार और बातचीत की अपनी एक शैली, तौर तरीका होता है। उनका अनुसरण करोगे तो वैसे ही बनोगे, जिनके साथ तुम उठते-बैठते हो। अच्छी संगति का मापदंड किसी कोर्ट या कारखाने में नहीं बनता। अच्छों के साथ रहोगे तो अपने आप अच्छे बनोगे।

हर व्यक्ति में अपने साथी की नकल करने और उसके जैसा बनने की प्रवृति होती है। इसीलिए यह भी जानना जरूरी है कि चरित्र के किन पहलुओं की नकल की जाए। मान लो कि तुम्हारा कोई गहरा दोस्त हो जो शराबी और जुआरी हो, पर सामाजिक दृष्टि से वह बड़ा अच्छा आदमी भी हो, ईमानदारी से अपना काम करता है, किसी को हानि नहीं पहुंचाता हो और सभी के साथ सभ्यता से पेश आता हो तो क्या तुम उसका साथ इसलिए छोड़ दोगे कि वह शराब पीता है या जुआ खेलता है ? नहीं, साथ मत छोड़ों, पर उसके अवगुणों की नकल मत करो। खूबसूरती की नकल करो। कलंक की नहीं। याद रखो, बुराई को न दूसरों पर लादो, न दूसरों की बुराई लेकर अपनी बुराइयों की संख्या पढ़ाओ।

-शंकर शर्मा, संपादक

सत्संग पत्रिका से साभार, 4, बड़तल्ला स्ट्रीट, कोलकाता-700007

दहेज, दिखावा, करें पराया।

गोष्ठी

भारत 2050 तक विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति

-डॉ. रामगोपाल अग्रवाल

सुविख्यात अर्थशास्त्री डा. रामगोपाल अग्रवाल को राजस्थानी पगड़ी पहनाकर स्वागत करते हुए सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा। साथ में परिलक्षित हैं श्री राम अवतार पोद्दार व श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।

८ फरवरी २००७। प्रख्यात अर्थशास्त्री एवं विश्व बैंक के पूर्व आर्थिक सलाहकार डा. रामगोपाल अग्रवाल ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित ''पारिवारिक व्यवसाय एवं खुली बाजार व्यवस्था की चुनौतियाँ'' विषयक गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि '' भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी वर्ष तक विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में उभरेगा।'' इससे पूर्व गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि मुक्त बाजार व्यवस्था में पारिवारिक व्यवसायों को बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कृषि क्षेत्र की उपेक्षा के संदर्भ में १९९३ से २००३ इन दस वर्षों में एक लाख से अधिक किसानों द्वारा आत्महत्या एवं वर्षों के स्वावलम्बी समय के बाद २००६ में पहली बार ५० लाख टन गेहूँ के आयात की चर्चा की।

डा. अग्रवाल ने कहा कि चीन में सुधार के पहले ५-१० वर्षों में कृषि पर महत्व दिया गया था। उन्होंने कहा कि परिवर्तन का दौर चल रहा है। देश में भी काफी परिवर्तन हुआ है। आज हमारा देश किसी से कम नहीं है। भारतीय विकसित आर्थिक व्यवस्था में अन्ततः सबसे बड़ी बात है कि १९६० में भारत कहाँ था और आज कहाँ है। इस दौरान देश ने हर क्षेत्र में उन्नति की है। देशवासी किसी भी स्तर पर शारीरिक स्वैच्छिक क्षमतावान हैं। एक जमाना था जब टेलीफोन लेना एक बड़ी बात थी। कुछ लोग कहते थे कि विश्व अर्थव्यवस्था में भारत कहाँ ठहरेगा, परन्तु खुशी की बात है कि पहले ५० सालों में भारत की अर्थव्यवस्था में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। **हम गर्व से आज कह सकते हैं कि हम किसी से कम नहीं हैं। २०५० तक भारत की जनसंख्या विश्व में सबसे ज्यादा हो जायेगी।** भविष्य में भारत विश्व के सबसे बड़े आर्थिक राष्ट्र के रूप में परिवर्तित हो जाएगा - परन्तु इसके लिए मेहनत करनी होगी। हमें पश्चिमी जगत की कॉपी बनना होगा - वस्त्र उद्योग एवं विद्युत उपकरण के क्षेत्र में आगे बढ़ने का ठोस प्रयास करना होगा।

चीन के आर्थिक विशेषज्ञ के रूप में परिचित डा. अग्रवाल ने सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा पूछे गये भारत की आर्थिक नीति एवं इसका भविष्य, पारिवारिक व्यवसाय, खुली बाजार व्यवस्था सम्बन्धित प्रश्नों के जवाब में कहा कि विश्व में सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में सामने आने के लिए भारत तथा चीन को अपना आर्थिक सहयोग बढ़ाना होगा। सन् 2020 तक चीन विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बन सकता है। उन्होंने कहाकि आर्थिक क्षेत्र में भारत की संभावनायें बहुत व्यापक है। भारत अगर अपनी आर्थिक नीतियों में थोड़ा-बहुत फेरबदल करता है तो सन् २०५० तक भारत चीन तथा अन्य देशों को पीछे छोड़ते हुए विश्व की सबसे

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

डॉ. अग्रवाल का पुष्पहार से स्वागत करते हुए सम्मेलन के पूर्व महामंत्री श्री दीपचन्द नाहटा। पास में खड़े हैं सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री मामराज अग्रवाल।

बड़ी आर्थिक शक्ति बन जायेगा। भारत और चीन दोनों देशों को बड़ी आर्थिक शक्तियों के रूप में उभरने के लिए एक-दूसरे का सहयोग लेना होगा। ४० वर्षों बाद दोनों देशों के बीच सहयोग का माहौल बढ़ा है। दोनों ही देश कई सामानों एवं कई क्षेत्रों में काम करके लाभान्वित हो सकते हैं। **डॉ. अग्रवाल ने कहा कि भारतीय व्यवसायियों को चीन से बेहतर सम्बन्ध स्थापित करने के लिए वहाँ की भाषा तथा संस्कृति के बारे में जानना चाहिए तथा चीन के साथ ही दक्षिण एशियायी देशों के बीच उत्पन्न व्यापारिक संभावनाओं का भारत को पूरा लाभ उठाना चाहिए।**

यह बात सही है कि भू-मण्डलीकरण का असर अच्छा नहीं रहा परन्तु भारत एवं चीन ने अपने ढंग से वैश्वीकरण किया। भारत में आत्मविश्वास अब काफी आ गया है। हमलोग जिस ढंग से ग्लोबलाइजेशन कर रहे हैं वह ठीक है। **हम धीरे-धीरे नं.-१ की ओर बढ़ रहे हैं। पिछले ५०सालों में जो भारत में जन्मे थे, वे कहा करते थे कि वे कहाँ जन्म लिए, अब जो जन्म लेंगे वे गर्व से कहेंगे कि वे यहाँ, भारत में जन्मे हैं।**

पारिवारिक व्यवसाय की तारीफ में डा. अग्रवाल ने कहा कि परिवार की शक्ति ही व्यवसाय को आगे बढ़ाती है। मारवाड़ी समुदाय पारिवारिक व्यवसाय में विश्वास रखते हैं। यही कारण है कि मारवाड़ी समाज में पारिवारिक व्यवसाय काफी हद तक सफल रहा है। जापान, कोरिया में भी पारिवारिक व्यवसाय काफी सफल रहा है। यहाँ तक कि अमेरिका-यूरोप में कई बड़ी कम्पनियों में पारिवारिक व्यवसाय देखने को मिलते हैं। हमारे यहां एक शब्द है Trust। पारिवारिक व्यवसाय Trust का निर्माण करता है। पारिवारिक व्यवसाय में अन्य समाज के लोग भी आगे हैं। दक्षिण भारत ने इसमें काफी प्रगति की है। उन्होंने कहा कि पारिवारिक व्यवसाय को पेशा के रूप में बढ़ावा देना चाहिए तथा साथ ही साथ शिक्षा पर भी जोर दिया जाना चाहिए। वर्तमान युवा पीढ़ी में कुछ परिवर्तन आए हैं उन्हें नयी तकनीक की ओर प्रोत्साहित करना होगा। युवा वर्ग को और अधिक प्रभावशाली बनना है। उन्हें इन्टरनेट, कम्प्यूटर आदि का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा करना होगा। भारत का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है मारवाड़ी समाज का भविष्य भी सुनहरा है। यह बात पुरानी हो गयी है कि मारवाड़ी समाज पढ़ाई-लिखाई नहीं कर सकता। आज मारवाड़ी समाज की लड़कियाँ भी उच्च शिक्षा में काफी आगे आयी हैं। सम्मेलन के इस कार्यक्रम में आकर मुझे काफी खुशी हुई है। कलकत्ता में ही पला-बढ़ा हूँ। कभी यहाँ के पोद्दार छात्र निवास में रहकर पढ़ता था।

प्रश्नकर्त्ताओं में सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, हरिप्रसाद बुधिया, बंशीलाल बाहेती, बालकृष्ण माहेश्वरी, हरिप्रसाद कानोड़िया, राजेन्द्र खण्डेलवाल, डा. राजेश कुमार (आई.पी.एस.) आदि प्रमुख थे।

इसके पूर्व सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम औतार पोद्दार ने डा. राम गोपाल अग्रवाल के परिचय में कहा कि डॉ. अग्रवाल ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. कर गोल्ड मेडल प्राप्त किया है एवं इंग्लैण्ड से पी.एच.डी. की है। ये पिछले २५ वर्षों से विश्वबैंक में कार्यरत हैं। डा. अग्रवाल एशियन डेवलपमेन्ट बैंक में सलाहकार भी हैं। ये चीन के आर्थिक विशेषज्ञ के रूप में भी जाने

विचार गोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. रामगोपाल अग्रवाल का जीवन परिचय देते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार। परिलक्षित हैं बायें से सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, सभापति श्री सीताराम शर्मा, मुख्य अतिथि डॉ. अग्रवाल।

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

डा. रामगोपाल अग्रवाल को सम्मेलन साहित्य भेंट करते हुए सहयोगी सम्पादक श्री शम्भू चौधरी।

सम्मेलन द्वारा आयोजित "पारिवारिक व्यवसाय एवं खुली बाजार व्यवस्था की चुनौतियाँ" विषयक गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डा. रामगोपाल अग्रवाल।

जाते हैं तथा इन्होंने कई पुस्तकें लिखी हैं। इनकी ख्याति विश्व में अर्थशास्त्री के रूप में है। इन्होंने चीन के २०२० तक विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने की प्रथम भविष्यवाणी अपनी पुस्तक में की थी जो कि सत्य सिद्ध होती प्रतीत है।

इस अवसर पर डा. रामगोपाल अग्रवाल को पुष्पहार एवं राजस्थानी पगड़ी पहनाकर तथा उन्हें शॉल एवं श्रीफल प्रदान कर सम्मानित भी किया गया।

श्री शर्मा ने डा. अग्रवाल को मारवाड़ी समाज की बदलती तस्वीर का प्रतीक बताते हुए उन्हें सम्मेलन की स्थापना एवं इसके समाज सुधार, समरसता आदि उद्देश्यों से अवगत कराया। गोष्ठी में डा. अग्रवाल के अग्रज सुप्रद्धि समाजसेवी श्री मामराज अग्रवाल सहित उपस्थित अन्यान्य सदस्यों में सर्वश्री दीपचन्द नाहटा, जुगल किशोर जैथलिया, नन्दलाल सिंहानिया, ओम लड़िया, सूर्यकरण सारस्वा, शम्भू चौधरी, कैलाशपति तोदी, विमल कुमार चौधरी, प्रेमचन्द सुरेलिया आदि। सम्मेलन के कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। ●

लघुकथा

भूल सुधार

एक मूर्तिकार मूर्तियाँ बनाता था और उन्हें बेचकर जीवनयापन करता था। उसकी एक मूर्ति प्रायः एक रुपये में बिकती थी।

मूर्तिकार का लड़का बड़ा हुआ तो मूर्तिकार ने इसी काम में उसका भी लगाया। लड़का कुशाग्र बुद्धि का था। जल्दी ही अच्छी मूर्तियाँ बनाने लगा और वे मूर्तियाँ पिता की अपेक्षा दुगने दाम में अर्थात् दो रुपये में बिकने लगी। फिर भी बाप ने अपना नित्यक्रम जारी रखा। वह लड़के की मूर्तियों को बहुत सूक्ष्म दृष्टि से देखता और उनमें जो त्रुटियां होती उसे सुधारने का सुझाव देता।

लड़के के अभिमान को चोट लगी, उसकी मूर्तियाँ दुगने दामों में बिकने लगी थी। फिर भी प्रशंसा के स्थान पर उसके कार्य में पिता द्वारा त्रुटियाँ ही निकाली जाती थी। उसने अपने दुख की बात पिता के सामने प्रकट कर दी। पिता को भारी दुख हुआ। उसने कहा बेटे, तेरी भावी प्रगति अब रुक गई। दो रुपये से अधिक मूल्य की वस्तु अब तू नहीं बना सकेगा। यही भूल मुझसे भी बचपन में हुई थी और एक रुपये की प्रतिमा बनाने के बाद अधिक प्रगति न कर सका। वही भूल तुम अब कर रहे हो। लड़के ने अपनी भूल समझी और समीक्षा को न केवल पिता से वरन् दूसरों से भी कहने लगा। त्रुटियाँ जान लेना और उन्हें सुधारना यही तो निरन्तर प्रगति का मार्ग है।

अन्ध-विश्वास

एक पर्व था। गंगा स्नान के लिए अनेक धर्म-प्रेमी वहाँ आये। राजा और मन्त्री इन आगन्तुकों की मनस्थिति का विश्लेषण कर रहे थे। मन्त्री कहते थे "ये परम्परावादी है। लकीर पीटते हैं। अन्धानुकरण करते हैं। पर्व के समय भी वैज्ञानिक दृष्टिकोन को नहीं भूलना चाहिए इसका भी इन्हें ज्ञान नहीं है।" राजा इस बात से सहमत न था। दूसरे दिन किसी प्रमाण के आधार पर बात सिद्ध करने की शर्त ठहरी। एक साधु नित्य संध्या के लिए गंगा तट पर जाया करता था। लोटा बार-बार लाने और ले जाने के झंझट से बचने के लिए वह उसे बालू में एक निश्चित स्थान पर गाड़ रखता था।

पर्व के दिन लोगों ने साधु के इस कृत्य को किसी प्रकार देख लिया और समझा कि यह सिद्धि प्राप्त करने का कोई विशेष प्रयोग है। यात्रियों में जिन्हें जिन्हें यह समाचार विदित होता गया वे उसी प्रकार अपने-अपने लोटे जमीन में गाड़ते चले गये।

मन्त्री राजा को साथ लेकर आए और अन्धविश्वास का जीता जागत उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा-"देखिये कितने लोगों ने अपने लोटे गाड़ दिये, पर यह जानने की कोशिश नहीं की, कि यह परम्परा क्यों चली और किसने चलाई? इसका अनुकरण करने में लाभ है या हानि?"

मिलनी सबकी चार रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।

आत्मविश्वास

साध्वी कनकरेखा

हर व्यक्ति जीवन में सफल बनना चाहता है। असफलता कोई नहीं चाहता, असफलता से बचने का उपाय है आत्मविश्वास, आत्मविश्वास, संजीवनी बूटी है जो मूर्च्छित मानव में प्राण का संचार करता है। वह पतवार है जो तूफानी सागर में नौका को पार पहुंचा देता है। वह सुदृढ़ हथियार है जिससे बड़े से बड़े आफत के पहाड़ को तोडा जा सकता है। आत्मविश्वास जीवन की प्रेरक शक्ति है जो महाबलवान प्रतिपक्षी को बहलीन बना देती है। उच्चतम शिखर पर पहुंचने का सशक्त सोपान है आत्मविश्वास। इसके द्वारा इच्छित मंजिल को प्राप्त किया जा सकता है। हर कठिनाई को पार किया जा सकता है।

आत्मविश्वास के बिना पांव लड़खड़ा जाते हैं, एक कदम आगे नहीं बढ़ सकता। संदेह से किया हुआ कार्य सफल नहीं होता। शेर का शिकार करने जाएं और मन में संशय हो कि शिकार कर सकूंगा या नहीं ? तो वक्त सफल हो सकेगा ? सिकंदर संशय को लेकर क्या विजय प्राप्त कर सकता था ? क्या नेपोलियन अपने अस्थिर विचारों से विश्व विजय का सपना देख सकता था ? नहीं, हर्गिज नहीं।

हम विश्व के इतिहास को उठाकर देखेंगे तो पता चलेगा कि आत्मविश्वास के द्वारा कितने महापुरुष बन गए। कुमार वर्धमान, राजकुमार से तीर्थंकर महावीर बन गए। सिद्धार्थ पुत्र गौतम बुद्ध के रूप में प्रसिद्ध हो गए। मोहनदास करमचंद गांधी राष्ट्रपिता के रूप में विख्यात बने। बालक तुलसी राष्ट्रसंत तुलसी के रूप में लोकव्यापी बने। **महापुरुष किसी का सहारा नहीं लेते। अपने आत्मविश्वास के सहारे ही मंजिल तक पहुंचते हैं। दूसरों के सहारे कुछ क्षण बिताए जा सकते हैं किन्तु जीवन को सार्थक नहीं बनाया जा सकता।**

व्यक्तित्व विकास का द्वार है- आत्मविश्वास! इसके अभाव में किसी प्रकार की सिद्धि व सफलता को नहीं पाया जा सकता। मनुष्य में विकास की असीम संभावनाएं उजागर नहीं होती। आत्मविश्वास के आलोक से इन आवरणों को दूर किया जा सकता है। आशा और विश्वास ही जीवन है। उसके बिना मानव बिना रीढ़ की हड्डी का मानव है। उस स्थिति में बचने की आशा क्षीण हो जाती है।

एक बार एक राजा के राज्य पर दूसरे राजा ने आक्रमण कर दिया। उससे निपटने के लिए राजा ने अपनी सेना भेजी। लेकिन जो सेना से समाचार आ रहे थे, वे उत्साहजनक नहीं थे, इसलिए वह बहुत उदास था।

राजा को उदास देख कर रानी ने पूछा, ''आज आप इतने उदास क्यों हैं ?'' राजा ने कहा, ''सीमा से समाचार मिल रहे हैं कि हमारी सेना निरंतर हार रही है, यही मेरी उदासी का कारण है।'' तब रानी ने कहा, ''मुझे इनसे भी बुरे समाचार मिले हैं कि राजा ने अपना आत्मविश्वास खो दिया है।''

रानी के वचन सुनकर राजा का सुप्त आत्मविश्वास जाग उठा। वह युद्ध के लिए बड़े उत्साह के साथ निकल पड़ा और विजयश्री प्राप्त करके ही पुनः लौटा।

निस्संदेह आत्मविश्वास आदमी को अटूट क्षमता प्रदान करता है, मन में आशा का संचार करता है। आत्मविश्वास वह शक्ति है जो हमारी इधर-उधर बिखरी शक्तियों को एकत्रित कर हमें अपने लक्ष्य के निकट खींच लाती है।

सचमुच आत्मविश्वास इच्छित फल देने वाला कल्पवृक्ष है। प्रगति की पगडंडी है जिस पर निरंतर गतिशील रहने से सफलता हमारा इंतजार करती है। हमारी इच्छित कार्य के प्रति निष्ठा और विशवास होना आवश्यक है।

इंग्लैंड के प्रधानमंत्री बैंजामिन डीजरेली लोकसभा में पहली बार भाषण देने के लिए खड़े हुए। मुंह से शब्द निकले और बंद हो गए। सब उस पर हंसने लगे, बैंजामिन अपनी असफलता पर खुद को धिक्कारने लगे। अंत में उन्होंने अपने आत्मविश्वास को प्रबल बनाते हुए मन ही मन निश्चय किया कि एक दिन वह आएगा जिस दिन लोग मेरे भाषण को उत्सुकता से सुनेंगे। वास्तव में कुछ दिनों बाद सचमुच में वैसा ही हुआ। अपने आत्मविश्वास के दम पर वे इंग्लैंड के प्रधानमंत्री बने और 25 वर्षों तक प्रधानमंत्री के पद पर रहे। उनके भाषण सुनने को अपार भीड़ इकट्ठा हो जाती।

आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है। बिना आत्मविश्वास के व्यक्ति छोटे से छोटा कार्य भी पूरा नहीं कर सकता। अतः आत्मविश्वास के साथ कदम बढ़ाएं, मंजिल आपका इंतजार करेगी। ●

जुबान की कीमत, मारवाड़ की हकीकत।

होली सम्मान

श्री नन्दकिशोर जालान — भीष्म पितामह
श्री सीताराम शर्मा — आचार संहिता
श्री मोहनलाल तुलस्यान — छुट्टी पाई
श्री हरिशंकर सिंहानिया — पद्मविभूषण
श्री हनुमान प्रसाद सरावगी — अमृत महोत्सव
श्री दीपचन्द नाहटा — देशभक्त
श्री रतनलाल शाह — अलविदा ना कहना
श्री भानीराम सुरेका — कहीं पे निगाहें कहीं पे निशाना
श्री हरि प्रसाद कानोड़िया — कर लो दुनिया मुट्ठी में
श्री विश्वम्भर नेवर — दो नाव की सवारी
श्री नन्दलाल रुंगटा — चाँदी ही चाँदी
श्री राज के पुरोहित — अमेरिका रिटर्न
श्री ओंकार मल अग्रवाल — गर्म राजनीति
श्री बालकिशन गोयनका — वरदहस्त
श्री गणेश प्रसाद कन्दोई — ट्रांसपोर्ट किंग
श्री राम अवतार पोद्दार — जेन्टलमेल
श्री अरुण गुप्ता — पन्कचुयल
श्री रवीन्द्र कुमार लड्ढा — सब जानते हैं
श्री ओम प्रकाश पोद्दार — कलकत्ते का राजा
श्री सतीश देवड़ा — यारों का यार
श्री संतोष जैन — आस्था
श्री प्रेमचन्द सुरेलीया — एवररेडी
श्री धर्मचन्द अग्रवाल — गुड मार्निंग
श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल — मैं हूँ ना
श्री नवल जोशी — जीना इसी का नाम है
श्री प्रदीप ढेढीया — मैं धार्मिक हूँ
श्री सूर्यकरण सारस्वा — रेस का घोड़ा
श्री सुभाष मुरारका — सबका दुलारा
श्री रामदयाल मस्करा — कन्स्ट्रक्शन
श्री मौजीराम जैन — धीर गम्भीर
श्री सुबीर पोद्दार — खबरीलाल
श्री राम गोपाल अग्रवाल 'नूतन' — अभिनन्दन
श्री बालकृष्ण दास मुन्दड़ा — रंग दे बसन्ती
श्री हरीकृष्ण चौधरी — हेरिटेज
श्री साधुराम बंसल — मियां कटरा
श्री मोहनलाल चौखानी — मेरी भी सुनो
श्री इन्द्रचन्द संचेती — ग्रासरूट
श्री हरी प्रसाद बुधिया — बिग 'बी'

श्री गौरी शंकर कायां — एक नजर
श्री प्रह्लाद राम अग्रवाल — यो आर एक्सीलेन्सी
श्री श्रवण तोदी — लाल सलाम
श्री द्वारका प्रसाद डाबड़ीवाल — अपना सपना मनी मनी
श्री सज्जन भजनका — राइजिंग स्टार
श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल (शांतिपुर) — जमाना हमसे है
श्री मामराज अग्रवाल — यंग मैन
श्री महाबीरप्रसाद अग्रवाल — जय आयुर्वेद
श्री विशम्भर दयाल सुरेका — बड़े भैया
श्री बासुदेव प्रसाद बुधिया — सहारा प्रणाम
श्री आत्माराम सौंथलिया (रांची) — न तीन में न तेरह में
श्री विश्वनाथ मारोठीया — कोई गिला नहीं
श्री जुगल किशोर सौंथलिया — कमल का फूल
श्री गीतेश शर्मा — यत्र-तत्र-सर्वत्र
श्री श्यामलाल जालान — वास्तु शास्त्र
श्री कन्हैयालाल सेठिया — महाकवि
श्री रघु मोदी — मैं मस्त हूँ
श्री बी. के. पोद्दार — संगीत रसिया
श्री बालकृष्ण डालमिया — इंगलिशमैन
श्री शांतिलाल जैन — गौ-सेवा
श्री शिवभगवान खेमका — वनस्पति घी
श्री सुशील ओझा — सेन्सेक्स
श्री राजाराम शर्मा — भागमभाग
श्री नरेन्द्र तुलस्यान — डेडी कूल
श्री नथमल बंका — कहां खो गये
श्री बसंत कुमार नाहटा — बादाम की कतली
श्री डुगरमल सुरेका — सदाबहार
श्री महेश कुमार सहारिया — दिल दिया दर्द लिया
श्री पद्म कुमार अग्रवाल — हर मर्ज की दवा
श्री पी. के. लीला — खाता-बही
श्री पवन जैन — बम्बई मेरी जान
श्री डा. कल्याण मल लोढ़ा — सरस्वती पूजा
श्री महावीर नारसरिया — गोईंग स्ट्रांग
श्री राम अवतार गुप्ता — एक नम्बर
श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल — मेरी आवाज सुनो
श्री राजेश खेतान — कल हो न हो
श्री सत्यनारायण बजाज — पुरानी याद
श्री कमल गाँधी — बाबुल की दुआएं लेती जा

बुरा न मानो होली है

श्री हर्ष नेवटिया	सर उठा के जियो
श्री हरिमोहन बांगड़	दानबीर
श्री पुष्कर लाल केडिया	हम हिन्दुस्तानी
श्री अजय रुंगटा	भाई साहब
श्री जे. पी. चौधरी	दोनों हाथ में लड्डू
श्री संजय बुधिया	जीत पर जीत
श्री राधेश्याम गोयनका	जीने के बहाने बहुत हैं
श्री रवि पोद्दार	धीर गम्भीर
श्री महेन्द्र जालान	लम्बी छलांग
श्री एन. जी. खेतान	जीत पक्की
श्री एन. आर. गोयनका	कोक पीयो और जीओ
श्री आन. एन. झुनझुनवाला	मौजमस्ती
श्री सुनील कुमार डागा	बेस्ट टी
श्री केवलचन्द मिमाणी	गुलाब जल
श्री सुरेश कुमार बागड़ी	मॉर्निंग वाक
श्री कृष्ण खेतान	अभी दम है
श्री नथमल केड़िया	पकड़
श्री राजेन्द्र बच्छावत	कुबेर
श्री जे. के. जैन	दिखा दिया
श्री कुंज बिहारी अग्रवाल	राधे-राधे
श्री नथमल केडिया	साहित्यानुरागी
श्री श्याम सुन्दर बगड़िया	देहदान
श्री गोविन्द शर्मा (हावड़ा)	मीठी धार
श्री गिरधारी लाल जगतरामका	लाचार हूँ
श्री रामनिवास चोटिया	ना काहू से दोस्ती...
श्री नारायण जैन	इन.कॉम
श्री बंसी लाल बाहेती	महाभारत
श्री सांवरमल भीमसरिया	गीत गाता चल
श्री बाबूलाल धनानिया	सेवा ही धर्म
श्री बालकृष्ण माहेश्वरी	अपनी बीती किसे सुनायें
श्री रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग	नयी कुर्सी
श्री ललित सकलचन्द गाँधी	गाँधीगीरी
श्री विजय कुमार मंगलुनिया	सर्वप्रिय
श्री बजरंगलाल नाहटा	खुशमिजाज
श्री कैलाश मल दूगड़	बस एक पल
श्री विजय कुमार गोयल	आपकी खातिर
श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया	ब्याह लड्डू
श्री शिव कुमार अग्रवाल	नेताजी
श्री सोम प्रकाश गोयनका	सुगंधित मसाला
श्री गोपाल सुतवाला	रेशमी रूमाल
श्री .लोकनाथ डोकानिया	लड़के लेंगे
श्री गोपाल अग्रवाल	हम साथ-साथ हैं
श्री नारायण प्रसाद माधोगढ़िया	सेवा ही धर्म
श्री डा. जयप्रकाश मूंधड़ा	जनसमर्थन
श्री दिलीप कुमार मनसुखलाल गांधी	सच्चा मित्र
श्री चिरंजीलाल अग्रवाल	हम साथ साथ हैं
श्री नथमल टिबड़ेवाल (पटना)	अध्यक्ष जी
श्री संतोष सराफ	धूम मचा ले
श्री जगदीश प्रसाद मुंधड़ा	नेतागिरी का चस्का
श्री श्यामलाल डोकानिया	दिलदार
श्री बनवारी लाल सोनी	लॉटरी
श्री गौरीशंकर सिंघानिया	जय भोलेनाथ
श्री मुकुन्द राठी	...ा तेरा क्या कहना
श्री गिरधारी लाल झुनझुनवाला	लक्ष्मी बरसे
श्री गोविन्द राम अग्रवाल (धन्नावाले)	एकलव्य
श्री विश्वनाथ भुवालका	हर दिल अजीज
श्री रामचन्द्र बड़पोलिया	खिलाड़ी नम्बर वन
श्री देवेन्द्र कुमार दूगड़	कौन बनेगा करोड़पति
श्री नारायण जैन	लाल सलाम
श्री विश्वनाथ जाजू	चौकी धानी
श्री ओम लड़िया	तुम मुझे खून दो
श्री नवरतन सुराणा	कानून
श्री जयगोविन्द इन्दौरिया	लगे रहो मुन्नाभाई
श्री जुगल किशोर सराफ	ऑल पावरफूल
श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला (कोलकाता)	बुलन्दी
श्री नन्दलाल अग्रवाल	राईजिंग स्टार
श्री संदीप भुतोड़िया	पेज थ्री
श्री नरेश अग्रवाल	बुलन्दी
श्री जयकुमार रुसवा	याद सताये
श्री शंभु चौधरी	कलम के धनी
श्री रोशनलाल धोणा	...रियाणा की जय
श्री सुन्दर लाल कलानोरिया	उभरता तारा
श्री सुभाष जैन	हम भी कम नहीं
श्री रमेश गोपीकिशन बंग (नागपुर)	जय पवार
श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला (पटना)	रिजर्व बैंक
श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया (देवघर)	बँटवारा
श्री संतोष कुमार अग्रवाल (अधिवक्ता)	धरोहर
श्री मुकुन्द दास माहेश्वरी (जबलपुर)	सोनिया जी के नाम पर
श्री नरेश चन्द्र विजयवर्गीय (हैदराबाद)	जोड़ीदार
श्री कमल नोपानी (पटना)	हँसमुख
श्री धर्मचन्द जैन ''रा रा'' (रांची)	तेज रफ्तार
श्री रमेश कुमार गर्ग (जबलपुर)	राजनेता
श्री रमेश कुमार बंग (हैदराबाद)	जय महेश
श्री शंकर शर्मा	सत्संग समाचार
श्री हरी प्रशाद अग्रवाल	बस एक पलें
श्री दिनेश बजाज	आज का एम एल ए

बुरा न मानो होली है

श्री प्रकाश चण्डालिया	सलाम नमस्ते
श्री आत्माराम तोदी	कार्यकर्त्ता
श्री संजय हरलालका	ट्रैफिक सिगनल
श्री अरुण मल्लावत	'अनोखी अदा
श्री नन्दलाल सिंघानिया	क्या कूल हैं हम
श्री विश्वनाथ कहनानी	मिस कॉल
श्री राजीव माहेश्वरी	गीत गोविन्द
श्री संतोष कुमार हरलालका	स्कूलों का चक्कर
श्री विश्वनाथ सराफ	मार्च पास्ट
श्री मदन गोयल	खोसला का घोसला
श्री नीलमणि राठी	स्वर वंदना
श्री प्रेम कपूर	गुरू भाई
श्री प्रमोद सराफ (असम)	युवा रत्न
श्री अरुण बजाज (असम)	अर्जुन
श्री ओम प्रकाश अग्रवाल (सिलीगुड़ी)	जोर लगाये रहो
श्री पवन सिकारीया (असम)	दिल्ली अब दूर...
श्री प्रमोद शाह	स्वाभिमान
श्री अनिल जैना (असम)	ना-ना करते प्यार...
श्री बलराम सुल्तानिया (चायबासा)	पानी-पानी रे
श्री अनिल जाजोदिया (वाराणसी)	युवा शक्ति
श्री मनमोहन लोहिया (वाराणसी)	लापता
श्री महेश जालान (पटना)	जा पे कृपा लालू की....
श्री किशन लाल बजाज	बाबा रामदेवजी
श्री विजय कानोड़िया	''बंगलादेशी''
श्री संतोष कानोड़िया	कानूनी धार
श्री महेश साह	कुशल प्रबन्धक
श्री सुभाष सोंथलिया	पिया का घर
श्री कैलाश पति तोदी	SMS का जमाना है
श्री संजय अग्रवाल (रिसड़ा)	संकट की घड़ी
श्री दिलीप गोयनका	लॉटरी खुल गई
श्री विमल कुमार चौधरी	एक पंथ दो काज
श्री अशोक कुमार देवतिया	अपनों से हारा
श्री ओम प्रकाश अग्रवाल	भरोसा नहीं
श्री अनील डालमिया	दरिद्रनारायण
श्री हरिश काबरा	पावभाजी
श्री विमल नवलखा (सिलीगुड़ी)	सैलवन
श्री विनोद कुमार सराफ	एक्यूप्रेसर
श्री मुकेश खेतान	तेरा मूंडा बिगड़ा जाए
श्री शिवरतन अग्रवाल	जमीन की तलाश
श्री सतीश मुरारका	सज्जन रे झूठ....
श्री मनीष डोकानिया	फिनासिंयल एडभाइजर
श्री श्रवण कुमार अग्रवाल	निमंत्रण पत्र
श्री जगदीश चन्द मिश्रा 'पप्पू'	आखिर जीत ही गये
श्री रवि कुमार अग्रवाल	आ अब लौट चलें
श्री श्याम सुन्दर साना	हनुमान
श्री जयप्रकाश लाठ (जप्पू)	जप्पू बोले तो
श्री अशोक अग्रवाल (रायगढ़)	फोटो छपास
श्री ओम प्रकाश पाटनी	मेहमान
श्री अशोक बूच्चा	थोड़ा खट्टा थोड़ा मीठा
श्री प्रमोद सराफ (पटना)	दोस्त-दोस्त ना रहा
श्री संतोष सरावगी	संतोषी
श्री कैलाशचन्द अग्रवाल	500 शाखा
श्री गोविन्द मेवाड़	डा. झटका
श्री गोपाल कलवानी	गणदेवता
श्री नारायण जैन (कोलकाता)	गायक
श्री ताराचन्द डोलिया (असम)	छवि सुधार
श्री नरेश अग्रवाल (झालदा)	तेरे कुचे से
श्री वीरेन्द्र जालान	करने की तमन्ना है
श्री बुध सिंह सेठिया	व्यक्ति विकास
श्री राजेन्द्र कुमार दायमा	दाई मां
श्री सुरेश अग्रवाल (जयपुर)	जंवाई
श्री ललित चौररिया	नमकीन
श्री नीतिन बंग	तरबूजा
श्री संजय अग्रवाल (सेन्चुरी)	सज्जन पुरुष
श्री मधुसूदन सिकारिया	मधुर मुस्कान
श्री प्रमोद कुमार जैन	नेक इंसान
श्री पुरुषोत्तम शर्मा	मौका नहीं मिला
श्री ओमप्रकाश तुलस्यान	कोणार्क मंदिर
श्री पवन कुमार गोयनका	पवन पुत्र
श्री मन्नालाल बैद	नीम हकीम
श्री विरेन्द्र प्रसाद धोका (महाराष्ट्र)	जन-गण-मन
श्री राजगोपाल सारडा	चाँद के तारे
श्री पुष्कर राज लोहिया	सटीक उत्तर
श्री मुकुन्द रूंगटा	धनवर्षा
श्री अनिल अग्रवाल	हम भी हैं
श्री रामावतार किल्ला	'अन्ना'
श्री संजय मानहिंसका	'संजय'
श्री अवधेश खेमका	नारायण नारायण
श्री निरंजन अग्रवाल	गुमशुदा की तलाश
श्री पवन अग्रवाल (असम)	सफल प्रयास
श्री प्रदीप खदेरिया	आने से उसके...
श्री राजेश हिम्मतसिंहका (असम)	टाटा मोटर
श्री नवल किशोर मोर(असम)	मैं तो लुट गया
श्री निर्मल हरलालका (असम)	हर हर गंगे
श्री अनिल मोहनका (आसनसोल)	मंचिष्ट
श्री नवरतन पारिक (सिलीगुड़ी)	हीरा है सदा के लिए

बुरा न मानो होली है

श्री ओम प्रकाश तापड़िया (दार्जिलिंग)	बगावती सूर
श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल (उड़ीसा)	ये अन्दर की बात है
श्री कृष्ण कुमार खेमका	दिल लाया हूँ
श्री प्रताप सुराणा	संगीत संध्या
श्रीमती कुसुम जैन	नया काव्य संग्रह
श्री बाबूलाल गगड	मैं तैयार हूँ
श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल	बेटा बाप से भी गोरा
श्री नवल किशोर मोर	एक्सप्रेस ट्रेन
डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका	शिक्षाप्रेमी
श्री ललित धानुका	जल कल्याण
श्री ओमप्रकाश चौधरी	एक तिहाई महिलाओं को
श्री मोहनलाल जालान	राजनेता
श्री भगवानदास खेमका	वयोवृद्ध
श्री प्रह्लाद राय तोदी	प्रेरक
श्री त्रिलोकचन्द बाजला	लालगुलाब
श्री अभय कुमार सराफ	नजर का फेर
श्री राजकुमार केडिया	हाँ ''जी''
श्री धर्मचन्द बजाज	''सपनों में''
श्री मुरलीधर केडिया	कोई पुछो हमें
श्री नागरमल बाजोरिया	मारवाड़ी शेर
श्री अनिल शर्मा	''नो-टरी''
श्री राजकुमार बोथरा	काशी विश्वनाथ
श्री मनोज पोद्दार	जमींदारी
श्री परशुराम तोदी 'पारस'	जय कवि

महिलाएं

श्रीमती प्रेमा पंसारी	संतोषी जीव
श्रीमती अरुणा जैन	डबल मार्च
श्रीमती विमला डोकानिया	भाभी जी
श्रीमती उषा परसरामपुरिया	हम साथ-साथ
श्रीमती पुष्पा चोपड़ा	बिजनेस वुमेन
श्रीमती सुशीला चनानी	याद ये दिल मांगे मोर
श्रीमती सरला माहेश्वरी	प्रतिबद्धता
श्रीमती मीना देवी पुरोहित	दुखवा का से कही
श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल	पिया संग भाये
श्रीमती कुसुम सराफ (पटना)	भौजाई
श्रीमती वीणा मुन्दरा	स्वविकास
श्रीमती निरज जैन	समाजबिगाड़
श्रीमती कुसुम मुसद्दी	गुरुदेव की सेवा में
श्रीमती राजकुमारी हिम्मतसिंहका	बागडोर
श्रीमती सुनीता झंवर	हम भी कम नहीं

होली विमलेश जी के दोहों से

म्हानैं भी छोरो ब्याण है

दस दिन पैल्यां की ही थानैं बताऊं
एक अजनबी सो अधेड़ मन्नै आ बोल्यो
म्हारै भी लड़को ब्यावण सावै होर्‌यो है
मैं अखबार बांचतो सोची होर्‌यो होसी
पण बींकै क्यांको धीरज थो
ओज्यूं बोल्यो-म्हांनै भी बेटो ब्याण है
मैं अखबार पटक कै बोल्यो ब्याद्यो तो, मैं बरजूं हूँ के?
हक मेरै सैं हीं ब्याणं है!
मनैं यूं नाराज देखकै
बो झट जोड़्या हाथ पगां में पगड़ी मेली
कह्यो गिड़गिड़ाकै थे यूं नाराज मनां होवो
मैं तो थारै कानां में काड़ण आयो थो क
कोई छोरी थारै सैं टकरावै
तो थे मेरे छोरै को भी ध्यान राखियो।

उत्तर-पड़ूत्तर

''ह्यू मिनिटीज को प्रोफेसर छोरै नैं पूछ्यो सृष्टी करै बिकास, उदाहरण दे समझारै''
''मेरी मां, ब्या में बस एक पिलँग ल्याई थी पांच पिलँग अर तीन खटोला घल्है म्हारै''

सुवाल-जुबाब

''एक गणित को अध्यापक छोरै नैं पुछ्यो एक एक में जोड़ै तो कुल कितणाँ होवै ?''
''सर, पैल्यां तो एक एक जुड़ दो ही होवै पण दस बारा बरसां में दस-बारा होवै!''

होली जलायें नहीं, मंगलायें!

स्नेहलता बैद

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। संवेदनशील सम्बन्धों की डोरी में बंधकर ही वह अपनी जीवनयात्रा को आगे बढ़ाता है। सम्बन्धों के अभाव में जीना सिर्फ दो ही व्यक्तियों के लिए संभव हो सकता है – एक है पागल, दूसरा फकीर। इन दोनों के लिए रिश्तों और सम्बन्धों की आवश्यकता नहीं होती है। ये एकाकी रहकर आराम से जिन्दगी जी लेते हैं पर इनके बीच की कड़ी मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता। जीवन दूसरों से जुड़कर ही सार्थकता पाता है। भावनात्मक एवं मानवीय सम्बन्धों से कटकर जीवन बोझिल एं भारस्वरूप बन जाता है। किन्तु साथ ही यह कहना भी अनुपयुक्त न होगा कि बढ़ते उपभोक्तावाद एवं पश्चिम के अंधानुकरण के कारण हम संवेदनहीनता, अपरिचय तथा अजनबीपन की दीवारों में खुद को समेटते जा रहे हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में त्यौहार, विशेषत: रंगों का त्यौहार होली की जीवन को सरस एवं भावपूर्ण बनाने में अहम् भूमिका है। बसन्त के आते ही शरीर, मन और प्राणों में एक अजीब उल्लास का संचार होने लगता है। वातावरण में एक गंध फैलने लगती है। सूखे पत्ते झड़ते हैं एवं पेड़ों में नये हरे पत्ते आने लगते हैं। आनन्द के आरोहण का अनुपम अनुष्ठान है होली। होली के अर्थ है आनन्द और उत्साह, हर्ष और उल्लास। होली का नाम लेते ही छोटे, बड़े, जवान, बूढ़े सबके मन थिरकने लगते हैं। गुलाल और अबीर से भरी यादें आँखों में तैरने लगती है।

पुरानी कथा है – विधर्मी असुर हिरण्यकश्यप की बहन होलिका अपने भाई के कहने से धर्मप्राण प्रह्लाद को जलाने के लिए गोद में लेकर बैठी थी। होलिका को वरदान था कि उसका आग कुछ नहीं बिगाड़ सकती है। इस विश्वास से प्रह्लाद को जलाने के लिए जैसे ही होलिका आग में बैठी वह जल गई और प्रह्लाद का बाल भी बांका नहीं हुआ। अत: इस त्यौहार का संदेश है कि होलिका रूपी अहम् को जलाना है पर प्रह्लाद अर्थात् धर्म को बचाना भी है। आज हमारे देश में उपभोक्तावाद का बोलबाला हो रहा है। हम असंयमी, स्वार्थी, लोभी, क्रूर हिंसक बन रहे हैं। अर्थ पशु और काम पशु बन रहे हैं। इसी का नाम होलिका है। हमारा राष्ट्र गंभीर संकट का सामना कर रहा है। राजनीति का सत्तालोलुप, विघटनकारी, अवसरवादी, भ्रष्ट और अपराधी चरित्र सबके सामने हैं। राजनेताओं के प्रति अश्रद्धा और अनादर का भाव पूरे समाज में व्याप्त है। **मीडिया, जिसे लोकतंत्र का प्रहरी कहा जाता है, जिसका काम है लोक शिक्षण और लोक जागरण, वही मीडिया अब निरा व्यवसाय बन गया है। वह केवल हिंसा और अपराध बेचता है। उसकी दृष्टि में केवल बलात्कार, अपहरण, चोरी, डकैती, हत्या और अश्लीलता ही समाचार है। वह समाज को ऊपर उठाने के बजाय गिराने का माध्यम बन गया है।** भारतीय सीमाओं पर खतरा बना हुआ है। साम्प्रदायिक शक्तियां एक पर एक विस्फोट कर हमारी अंदरूनी शांति भंग करना चाहती है। होली का संदेश है बुराई मिटाई जाय, अच्छाई बचाई जाय। इस समय दोनों के बीच विभाजन रेखा खींचने के लिए विवेक की आवश्यकता है। जिस प्रकार राजहंस नीर क्षीर विवेक करता है, दूध का दूध और पानी का पानी करता है वैसे ही विवेक की हमें आवश्यकता है। हम होली जलाये नहीं, होली मंगलायें। मंगलाने का अर्थ है इस दाह को मंगलकारी बनायें। मंगलकारी तभी बनेगी जब होलिका अर्थात् अन्याय अधर्म, अराजकता जले और प्रह्लाद के रूप में हमारी जो अच्छाईयां है सहयोग, यानि परस्पर सहयोग, सद्भाव, परोपकार की पवित्र सांस्कृतिक परम्पराएं संरक्षित हो, हमारी सादगी और सरलता रक्षित हो। सामाजिक विषमता मिटे, आडम्बर, दिखावा एवं फिजूलखर्ची की बजाय सादगी को महत्व मिले तथा राष्ट्रीयताबोध तीव्र हो। हमारी शुभ संस्कृति रक्षित हो, यही समय की मांग है। यही युग की पुकार है कि सांस्कृतिक एकता के इस महापर्व पर हमारा आत्मबोध जागृत हो। ●

होली गीत

देवर

देवर म्हारो रे ओ हरिये रुमाल वाला रे, देवर म्हारो रे....2
बाजूबन्द घड़वायदे रे देवर घर में थारो सारो रे, बाजूबन्द....
(अरे) दाम तो घड़वाइरा रे लागे, नाम थारो रे
देवर म्हारो रे...
नथली पुवायदे रे दवर घर में थारो सारो पे, नथली...
(अरे) दाम तो पोवाइरा रे लागे, नाम थारो रे।
देवर म्हारे रे...
तिब्बरो चिणवायदे रे देवर, घर में थारो सारो रे। तिब्बारा...
(अरे) दाम तो मजूरी रा लागे, नाम थारो रे।
देवर म्हारे रे...
गोदड़ली भरवायदे रे देवर, घर में थारो सारो रे। गोदड़ली...
(अरे) नाम तो थारे भाई रो रे होसी काम थारो रे।
देवर म्हारे रे...

होली विशेष

होली में राजस्थान

गुलाबी नगरी जयपुर से लेकर बीदासर, भीलवाड़ा, झीलों की नगरी उदयपुर, महाराणा प्रताप के चित्तौड़ तथा नाथद्वारा से लेकर समूचा राजस्थान होली के समय उल्लास में भर जाता है। जहां-जहां बज उठते हैं चंग, निकल पड़ते हैं बहुरुपिये रचे जाते हैं स्वांग और सुनाई जाती हैं मीठी-मीठी गालियां।

कई मायनों में राजस्थानी होली का ढंग निराला होता है। होली पर निकलती हैं बारातें जिसमें चलती हैं गाजे-बाजे के साथ ऊंट-घोड़े यहां तक कि गधों की सवारियां भी। किन्तु बदलते समय और लोगों की व्यस्तता भरी जिन्दगी ने होली की मस्ती पर भी असर दिखाना शुरू कर दिया है। पहले जहां रात-रात भर हर जगह चंग बजते रहते थे, आज बजते तो जरूर है किन्तु इनकी संख्या में कमी आती जा रही है। वहीं चंग भी कुछ घंटे बज कर शांत पड़ जाते हैं। राजस्थान की धरती की होली की अपनी एक अलग पहचान है। यहां होली पर होती है चुहलबाजी। मिट्टी, कीचड़ से लेकर रंगों से सराबोर करने का हुड़दंग।

उड़ीसा में होली

उड़ीसा की होली का अपना एक अनोखा ही अंदाज है। यहां उड़ीसा के लोग 'फागुनी पूर्णिमा' को 'दौल पूर्णिमा' कहते हैं. यहां होली का पर्व फागुन शुक्ल दशमी से ही शुरू हो जाता है, जो कि चैत्र कृष्ण पंचमी तक चलता रहता है। उड़ीसा के छोटे-छोटे गांवों में 'राधा कृष्ण' की मूर्ति के साथ-साथ सभी देवाल्यों एवं मंदिरों से मूर्तियों को लाकर एक दिन घर का मेहमान बनाते हैं। उनका लाड़ करते हैं। तरह-तरह के व्यंजन बनाकर भगवान को भोग लगाते हैं। उनके साथ बड़े प्रेम से मिलकर पूरे गाँव के लोग बड़ी धूम-धाम से होली खेलते हैं। फिर विदाई के वक्त उन्हें रुपए-पैसे, वस्त्राभूषण आदि भेंट करके उनकी विदाई भी बड़ी धूम-धाम के साथ करते हैं। ऐसा एक नहीं प्रत्येक गांव में प्रत्येक घर के सामने फागुन शुक्ला दशमी से लेकर चैत्र कृष्ण पंचमी तक चलता रहता है। यहां का मारवाड़ी समाज भी जिस दिन 'होलिका' दहन होती है उस दिन जहां होली जलाई जाती है वहां पर इकट्ठे होते हैं एवं ठण्डी एवं जलती होलिका को धोक लगाते हैं। आपस में रंग-गुलाल एवं अबीर लगाकर अपना प्रेम प्रदर्शित करते हैं। छारण्डी के दिन सब मिल कर होली खेलते हैं और फिर 'होली मिलन' समारोह करते हैं। सांसकृतिक कार्यक्रम किये जाते हैं।

बृज की लट्ठमार होली

होली का नाम आते ही जन मानस की आँखों में साकार हो उठता है बृजभूमि का चित्र। होली और बृज एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं और यही कारण है कि होली में बृज की मूल संस्कृति और बृज में होली का उल्लास झलकता है। बृजभूमि के कण-कण में कृष्ण-कन्हैया और उनके सखा ग्वाल बालों और राधा गोरी के साथ उसकी छैल छबीली गोपिकाओं की लीलाओं का माधुर्य बिखरा हुआ है और इसी कारण होली पर्व की मादकता शत-शत रूपों में मुखारित हो उठती है। बृज की लता-पता, कुंज-निकुंज, यमुना तट और कदम्ब की क्यारियाँ होली के रसरंग में रसमय हो जाती है। बृज के मंदिरों में वैसे तो होली की शुरुआत बसंत से होती है, जब मंदिरों में गुलाल की होली प्रारंभ हो जाती है, किंतु होली को गति फाल्गुण की प्रार्थना को मिलती है, जबकि मंदिर द्वारकाधीश में रसिया गायन शुरू हो जाता है। अष्टमी से चैत्र मास प्रारंभ होने तक प्रत्येक दिवस की होली की अपनी अलग ही पंखुड़ी लाता है, किंतु बृज की होली में तो अनगिनत रंग हैं। अनगिनत रंग-बिरंगी पंखुड़ियाँ, बरसाने की लट्ठमार होली से लेकर पुरानी गोकुल के हुरंगे तक सभी तो अपने आप में अनोखी विशेषता लिए हैं। इन सबके साथ ही **चरकुला नृत्य, हुक्का नृत्य** होली के इस महान पर्व पर चार चाँद लगा देते हैं, बृज मस्ती से भर जाता है, मंदिरों का क्षेत्र होली के रंग से रंग जाता है।

टमाटरों से होली!

होली रंगों का त्यौहार है और बिना रंगों के होली कैसी ? परंतु ग्रीस में टमाटरों से होली खेली जाती है। यहां पर बड़े-बड़े रस भरे टमाटर पैदा होते हैं। इन्हें **'लव एप्पल'** कहा जाता है। होली के दिन सरकार की ओर से प्रत्येक नागरिक को दो किलो लव एप्पल भेंट किए जाते हैं। इस दिन लोग नए वस्त्र धारण कर इन टमाटरों से भरा झोला हाथ में लेकर राह पर निकल पड़ते हैं और रास्ते में जो भी स्त्री-पुरुष मिलते हैं, वे आपस में एक-दूसरे पर टमाटर मारते हैं। यहे 'लव एप्पल' जब शरीर से टकराकर फूटते हैं, तो समूचा शरीर इसके रस से भींग जाता है। टमाटर एक-दूसरे को मारने के लिए ये एक-दूसरे का दूर-दूर तक पीछा करते हैं और एक-दूसरे के शरीर पर टमाटर मारकर ही दम लेते हैं।

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

मारवाड़ी युवा मंच के संस्थापक अध्यक्ष श्री प्रमोद सराफ का पत्र

दिनांक 20 जनवरी 1985 को गुवाहाटी में मंच के प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष ने शपथ ग्रहण कर राष्ट्रीय स्तर पर मंच को सुसंगठित कनरे का दायित्व ग्रहण किया था। इसीलिये प्रति वर्ष 20 जनवरी का दिन मंच स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय संस्कृति में जनवरी माह का विशेष महत्व है। इसी माह के मध्य में मकर संक्रांति पर्व पूरे देश में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। अनेकता में एकता का स्वयंसिद्ध उदाहरण है यह। यहीं सूर्य उत्तरायण होकर लंबित शुभ कार्यों के संपादन हेतु प्रेरित करता है। यहीं से शुभ कार्यों के संपादन का सिलसिला पुनः प्रारंभ होता है। ऐसे कालखंड में हुई थी- राष्ट्रीय स्तर पर युवा मंच की स्थापना। परिणाम हम सबके समक्ष है।

पूरे देश में मंच की 500 शाखाएँ। देश के 19 राज्यों में मंच की शाखाएं। 150 से अधिक एम्बुलेन्स सेवा वाहन। विकलांग भाई बहिनों की सेवा हेतु सिलीगुड़ी में स्थाई प्रकल्प। देश के अनेक राज्यों में कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविरों के आयोजन का वार्षिक इतिहास। कहीं विद्यालय तो कहीं पुस्तकालय के माध्यम से देश के शिक्षा यज्ञ में आहुतियां। कहीं स्वास्थ्य जांच शिविर तो कहीं विशेष शल्य चिकित्सा आयोजन के द्वारा स्वस्थ भारत के निर्माण में सहभागिता। कहीं टीकाकरण तो कहीं 'योग' का वरण। कहीं सामुदायिक भवन तो कहीं बौद्धिक हवन। प्राकृतिक बाढ़ हो या तूफान, मंच इतिहास बनाता राहत में अवदान। अमृत धारा परियोजना के अन्तर्गत सैकड़ों जलप्रदाय केन्द्रों का संचालन मारवाड़ी संस्कृति का परिचालक है। मारवाड़ी युवा मंच एक ऐसा संगठन है जिसके राष्ट्रीय अध्यक्ष व पदाधिकारी निःस्वार्थ वर्षों तक पूर्णकालिक सेवाएं प्रदान करते हैं। अपने व्यक्तिगत एवं पारिवारिक एजेंडा पर मंच कार्यसूची को प्राथमिकता प्रदान करता है। अतः मंच कार्यकर्ताओं का दायित्व है कि समयदान की महत्ता समझें एवं समाजहित में इसका भरपूर उपयोग करें।

मंच इतिहास के अवलोकन हेतु मंच स्थापना दिवस एक सही अवसर प्रदान करता है। इतिहास का सही अवलोकन जहां ऊर्जा प्रदायी होता है, वहीं गलतियों की पुरावृत्ति को भी रोकता है। इतिहास सबक सिखाता है। मंच स्थापना दिवस के ऐतिहासिक पर्व पर हमें अपनी ताकत एवं कमजोरियों के संदर्भ में चिंतन करना चाहिए। क्या हमें अपनी ताकत का अहसास है? क्या हम हमारे संसाधनों का सही उपयोग कर पा रहे हैं? क्या हम हमारी कमजोरियों को दूर करने हेतु सजग एवं सक्रिय है? क्या हमारी प्रगति हमारी चाह के अनुरूप है? क्या हमारी गतिविधियां मंच दर्शन के पैमाने पर सही दिशा में अग्रसर हैं? क्या हमारी कार्यप्रणाली मंच संविधान की भावनाओं के अनुकूल हैं? क्या हम समाज के युवा वर्ग को आकर्षित कर पा रहे हैं? क्या हम युवा वर्ग की बेहतरी हेतु मानसिक चिंतन कर किसी योजना के निर्माण हेतु सचेष्ट हैं? क्या हम उपलब्ध अनुभव का उपयोग कर पा रहे हैं? क्या हम समाज की नारी शक्ति की प्रतिभा के समाजहित में उपयोग हेतु सहीरूपेणसचेष्ट हैं? इन प्रश्नों पर मंच के हर स्तर पर चिंतन की आवश्यकता है। इस चतिंन में मंच का सुनहरा भविष्य छिपा हुआ है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिलजी जाजोदिया के नेतृत्व में कार्यरत राष्ट्रीय कार्यकारिणी व पूरे मंच परिवार को दानपत्र योजना की सराहनीय एवं सार्थक सफलता हेतु हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ **एवं उनका आह्वान करता हूं कि उपरोक्त प्रश्नों पर चिंतन प्रक्रिया प्रारंभ करें।**

मंच का रजत स्थापना दिवस अब ज्यादा दूर नहीं है। आवश्यकता है कि इसे ध्यान में रखते हुए अभी से यथोचित कार्यक्रमों की योजनाओं के बोर में चिंतन किया जाए। ●

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

झरिया मारवाड़ी सम्मेलन का स्वर्ण जयंती समारोह संपन्न

सम्मेलन अध्यक्ष श्री शर्मा का आत्मचिन्तन पर जोर

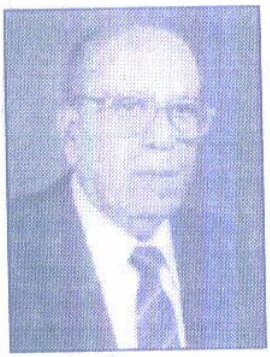
श्री संतोष अग्रवाल

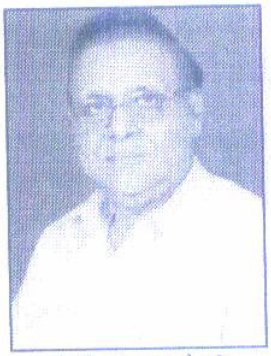
श्री ओमप्रकाश चौधरी

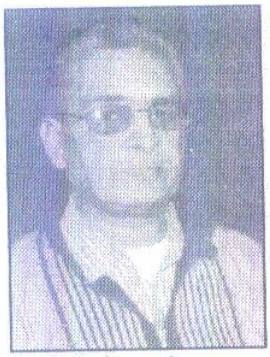
श्री रमेश भरतिया

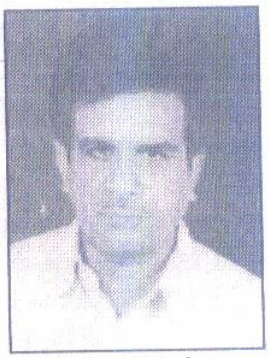
श्री पवन शर्मा

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने समाज के लोगों से सामाजिक सेवा कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने तथा संगठन को मजबूत बनाने में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने समाज के लोगों से राजनीति में बढ़-चढ़ कर भाग लेने की अपील की। श्री शर्मा ने उक्त बातें झरिया मारवाड़ी सम्मेलन के स्वर्ण जयंती समोह में लोगों को संबोधित करते हुए कहीं। श्री शर्मा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करते हुए कहा कि अब व्यवसाय के साथ-साथ उच्च शिक्षा पर जोर देना होगा। समय काफी बदल गया है। समाज के लोग बेटे-बेटियों में फर्क नहीं करते हुए उन्हें उच्च शिक्षा दिलाये। इससे आने वाली पीढ़ियों में नया संचार उत्पन्न होगा जिससे समाज ही नहीं देश का भी विकास होगा। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि विगत कुछ वर्षों में समाज में खामियां बढ़ी है। कुरीतियों व बाहरी आडंबरों में वृद्धि हुई है। यह घोर चिन्ता की बात है। युवा पीढ़ी को चकाचौंध व बाहरी आडंबरों से बचना चाहिए। वैवाहिक आचार संहिता का ईमानदारी पूर्वक पालन किया जाना चाहिए। सम्मेलन इस दिशा में सतत् प्रयत्नशील है। समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आत्मचिंतन शिविर का आयोजन करने पर उन्होंने विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि समाज की महिलाएं हर क्षेत्र में सफल रही है। हम सरकार से आरक्षण नहीं मांगते बल्कि उद्यमियों की सुरक्षा व कानून व्यवस्था की मांग करते हैं। सम्मेलन ने शिक्षा के लिए कोष बनाया है जिसके तहत प्रति वर्ष समाज के पाँच बच्चों को शिक्षा के लिए विदेश भेजा जाएगा। उन्होंने राजस्थानी भाषा को संविधान में शामिल करने पर हर्ष व्यक्त किया। श्री शर्मा ने झरिया मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों, अस्पताल व अन्य सेवा कार्यों पर प्रसन्नता व्यक्त की।

स्मारिका 'धरोहर' का प्रकाशन

झरिया मारवाड़ी सम्मेलन के पचास वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य पर आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह में विमोचित 'धरोहर' नामक स्मारिका में सम्मेलन द्वारा किए जा रहे सामाजिक सेवा कार्यों का विस्तृत विवरण तथा झरिया मारवाड़ी समाज के पूर्व व वर्त्तमान स्वरूप के तथ्यों को संकलित कर समावेस किया गया है। 'धरोहर' स्मारिका का संपादन मारवाड़ी सम्मेलन कार्य समिति के सदस्य अशोक शर्मा द्वारा किया गया है।

समारोह की अध्यक्षता झरिया मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष संतोष कुमार अग्रवाल, अधिवक्ता ने की। प्रांतीय अध्यक्ष गोविन्द प्रसाद डालमिया ने कहा कि समाज में आर्थिक रूप से कमजोर अभिभावकों के बच्चों को शिक्षा के लिए आर्थिक मदद दी जाएगी। इन्होंने युवकों से साकारात्मक भूमिका का निर्वाह करने का आह्वान किया। प्रांतीय उपाध्यक्ष राजकुमार केडिया व प्रमोद तुलस्यान ने समाज में किए जा रहे कार्यों में सहयोग करने की बात कही। प्रांतीय अध्यक्ष श्री डालमिया ने इस अवसर पर झरिया मारवाड़ी सम्मेलन की 'धरोहर'

विवाह में सादगी बरतें।

झरिया मारवाड़ी सम्मेलन

श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल
अध्यक्ष-मातृ सदन

श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल
अध्यक्ष-बालिका विद्या मंदिर

श्री जयप्रकाश देवरालिया
अध्यक्ष-महिला महाविद्यालय

श्री मामनचन्द कारीवाल
अध्यक्ष-श्री अग्रसेन भवन

श्री शंकरलाल अग्रवाल
अध्यक्ष-मारवाड़ी विद्यालय

राँची मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष वेदप्रकाश अग्रवाल भी समारोह में उपस्थित थे। इन लोगों ने भी अपने संबोधन में समाज के लोगों से सेवा कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाने की अपील की तथा सामाजिक विसंगतियों को समाप्त करने की दिशा में पहल करने पर जोर दिया। झरिया मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष संतोष कुमार अग्रवाल ने सम्मेलन एवं सम्मेलन द्वारा संचालित संस्थाओं की पूर्व व वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला तथा कहा कि समाज का पूर्ण सहयोग सम्मेलन को मिलता रहा है।

समारोह की शुरूआत वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हुई। समारोह का उद्घाटन माँ भारती, श्री अग्रसेन जी महाराज के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर मुख्य अतिथि सीताराम शर्मा ने किया तथा स्वर्ण जयंती के प्रतीक स्वरूप इक्काइन बैलून को आसमान में छोड़ा गया। समारोह की कार्यवाही का संचालन राजेन्द्र अग्रवाल ने किया। दो दिवसीय समारोह का आयोजन ३० व ३१ जनवरी २००७ को हालिका विद्या मंदिर, झरिया के नए भवन परिसर में आयोजित किया गया।

> **युवाओं को रचनात्मक सोच व समाज हित में अपनी उर्जा खर्च करनी चाहिए। आने वाले समय में युवाओं के कंधों पर सामाजिक दायित्वों की जिम्मेदारी है। भारतीय संस्कृति की पहचान दुनिया के नक्शे पर अलग रूप में मानी जाती है। दुनिया के बड़े व शक्तिशाली देश भी भारतीय संस्कृति का लोहा मान रहे हैं। यही कारण है कि पश्चिम के लोग शांति की कोज में हमारी ओर टकटकी लगाए दिखाई दे रहे हैं। सेवा भावना निस्वार्थ होनी चाहिए पद की चाहत के बिना किया गया कार्य सराहनीय होता है। पचास की उम्र पार कर चुके लोगों को भी समाज और देशहित में अधिकांश समय देना चाहिए। यह सारगर्भित उद्गार कलकत्ता से पधारी प्रबुद्ध महिला स्नेहलता वैद्य ने मुख्य वक्ता के रूप में झरिया मारवाड़ी सम्मेलन के स्वर्ण जयंती समारोह के समापन कार्यक्रम के अवसर पर व्यक्त किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि दुनिया के मानचित्र पर भारत ने अर्थव्यवस्था की दौड़ में भी अलग पहचान बनाई है। भारत के बाजारों पर आज विश्व की नजर टिकी हुई है। प्रगति की दौड़ में हम निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। पश्चिमी सभ्यता की अंधी दौड़ में हम अपनी संस्कृति को जीवित रखना ही हमारा मुख्य लक्ष्य, कर्म है। उन्होंने कहा कि समाज में अनेक कुरीतियां मुंह बाएं खड़ी है जिसमें अशिक्षा, जातिवाद, नारी उत्पीड़न, धार्मिक उन्माद प्रमुख है। समस्याओं के समाधान के लिए लंबे चौड़े भाषण वायदे किए जाते हैं लेकिन जब खुद पर समस्या आती है तो दहेज लेने में परहेज नहीं करते हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने के लिए लोगों को जागरूक होने की आवश्यकता है अन्यथा हम अपनी परम्पराओं से विमुख हो जाएंगे जो समाज के लिए घातक सिद्ध होगी।**

समारोह में श्याम सुंदर चौधरी अधिवक्ता बी.पी. डालमिया अधिवक्ता, शंकरलाल बुधिया, शिवकुमार खेमका, मुरलीधर पोद्दार, एम० पी० बंसल, जयप्रकाश देवरालिया, श्याम सुंदर अग्रवाल, अधिवक्ता, मामनचन्द कारीवाल, शंकरलाल अग्रवाल, श्याम सुंदर गोयल, ओमप्रकाश चौधरी, रमेश बंसल, अशोक शर्मा, विनोद अग्रवाल, दिलीप अगरवाल, विजय लिल्हा, अनूप सांवड़िया, जीवन अग्रवाल सहित सम्मेलन कार्य समिति के सदस्य, संस्थाओं के पदाधिकारी, सदस्य व काफी संख्या में समाज के गणमान्य बंधु उपस्थित थे।

स्वर्ण जयंती समारोह के पूर्व 30 जनवरी 2007 को पूर्वाह्न साढ़े दस बजे आयोजन स्थल पर दरिद्रनारायण भोज का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में लगभग 6 सौ से अधिक अपंग, वृद्ध दरिद्रजनों ने भोजन ग्रहण किया। सभी को दक्षिणा, वस्त्र, बर्त्तन, दिए गए। इसके पूर्व स्वर्ण जयंती कार्यक्रम की शुरूआत सुबह नौ बजे हवन से हुई। इसी दिन स्वर्ण जयंती समारोह के उद्घाटन सत्र के बाद मारवाड़ी विद्यालय, महिला

दहेज, दिखावा, करें पराया।

झरिया मारवाड़ी सम्मेलन

महाविद्यालय व बालिका विद्या मंदिर के छात्र-छात्राओं व नन्हें-नन्हें बच्चों द्वारा लगभग तीन घंटे तक नयनाभिरान व आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रो० महेश अग्रवाल, विनोद, शर्मा, जीवन अग्रवाल, दिलीप अग्रवाल सहित शिक्षण संस्थानों के शिक्षक शिक्षिकाओं की देखरेख में संपन्न हुआ।

समारोह के दूसरे दिन 31 जनवरी 2007 को बालिका विद्या मंदिर परिसर से विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें सम्मेलन द्वारा संचालित संस्थाओं की झाँकिया शामिल थी। शोभा यात्रा में बालिका विद्या मंदिर, मारवाड़ी विद्यालय का बैंड (घोष) दस आकर्षक धुन के साथ शोभा यात्रा में शामिल था। सम्मेलन कार्य समिति के पदाधिकारी, सदस्य, संस्थाओं की समितियों के पदाधिकारी-सदस्यों सहित समाज के काफी संख्या में गणमान्य बंधु शोभायात्रा में शामिल थे। अपराह्न तीन बजे समापन समारोह में जिला मारवाड़ी समाज के प्रबुद्ध, समाजसेवी श्री सत्यनारायण दुदानी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह में मुख्य वक्ता कलकत्ता से पधारी स्नेहलता वैद्य ने अपने सारगर्भित संबोधन से लोगों को अभिभूत कर दिया। श्री दुदानी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि मारवाड़ी समाज के लौग जहाँ भी गए, वहीं के हो गए। समाज के कमजोर वर्ग के लोगों को आगे बढ़ाने में समाज के लोगों ने नि:स्वार्थ भाव से काम किया है। उन्होंने कहा कि झरिया मारवाड़ी समाज उनके अपरिचित नहीं हैं। उन्होंने छढी से मैट्रिक तक की पढ़ाई डी. ए. भी स्कूल, झरिया से की है। झरिया सम्मेलन की संस्थाएं आज प्रगति के उच्च स्थान के लोगों को भी यहां से सीख लेनी चाहिए। किसी भी संगठन के पचास वर्ष पूरे होने, अपने आप में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। समारोह ने सम्मेलन स्थापनाकाल की पहली कार्य समिति के दो वरिष्ठ सदस्य विजय कुमार लिल्हा व हरनारायण सांवड़िया को सम्मेलन अध्यक्ष ने शाल प्रदान कर सम्मानित किया। साथ ही लगभग तीस वर्षों से सम्मेलन से जुड़े होने तथा उत्कृष्ट सेवा के लिए सामाजिक कार्यकर्त्ता राजेन्द्र अग्रवाल को शॉल ओढ़ा कर सम्मान किया गया। महिला महाविद्यालय के अध्यक्ष जयप्रकाश देवरालिया ने माला प्रदान कर तथा अग्रसेन भवन समिति के अध्यक्ष मामनचन्द कारीवाल ने संकटमोचन हनुमान जी की मूर्ति प्रदान कर राजेन्द्र अग्रवाल का सम्मान किया।

धन्यावाद ज्ञापन पवन शर्मा ने किया तथा समारोह की कार्यवाही का संचालन राजेन्द्र अग्रवाल ने किया। इसके पश्चात दूसरे दिन भी सम्मेलन द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों के छात्र-छात्राओं द्वार रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। स्वर्ण जयंती समारोह का दो दिवसीय आयोजन पूरी तरह सफल रहा।

लघुकथा

धारणा का फल

मनोवैज्ञानिकों ने परीक्षा-भवन में एक ही कक्षा के विद्यार्थियों को दो भागों में विभक्त करके अलग-अलग बिठाया। उनमें से आधे विद्यार्थियों को प्रश्न पत्र देने से पूर्व समझाया गया कि प्रश्न पत्र इतना सरल है कि तुम्हारे से निचली कक्षा के विद्यार्थी भी हल कर सकते हैं, किन्तु तुम लोगों से इसलिए हल कराया जा रहा है ताकि यह ज्ञात हो सके कि क्या तुम में भी कोई ऐसा विद्यार्थी है, जो इसे हल नहीं कर सकता। वही प्रश्न पत्र दूसरे कक्ष में बैठे हुए विद्यार्थियों को दिया गया और उन्हें कहा गया कि प्रश्न पत्र जरा कठिन है। वह देखने के लिए दिया गया है कि क्या तुम में से कोई इसे हल भी कर पाता है या नहीं। बच्चों को जैसे कहा गया उनकी वैसी धारणा बन गयी। जिन्हें कहा गया था प्रश्न पत्र सरल है उन १५ विद्यार्थियों में से १४ ने प्रश्न पत्र हल कर दिये और जिन्हें कठिन बताया गया था, उन १५ में से एक मात्र विद्यार्थी ही प्रश्न पत्र हल कर पाया। किसी बात को बिना जाँचे परखे ही उससे समम्बन्धित कोई दृढ़ धारणा अथवा मान्यता बना लेना ठीक नहीं।

जागो मां जागो

बेटियाँ

ओस की बूँद सी होती हैं बेटियाँ,
खुरदुरा हो स्पर्श तो रोती हैं बेटियाँ।
रोशन करेगा बेटा बस एक वंश को,
दो-दो कुलों की लाज ढोती हैं बेटियाँ।
कोई नहीं है दोस्तों, एक दूसरे से कम,
हीरा अगर है बेटा, तो मोती है बेटियाँ
काँटों की राह पे खुद चलती रहेगी रोज,
औरों के लिए फूल ही बोती है बेटियाँ।
विधि का विधान या दुनिया की है ये रस्म
क्यों सबके लिए भार होती है बेटियाँ।
धिक्कार है उन्हें जिन्हें बेटी बुरी लगे
सबके लिए बस प्यार संजोती हैं बेटियाँ।

सौजन्य : मंच संदेश (जनवरी २००७)
रचनाकार : श्री ओम पाटनी

एक आन्दोलन पूरे जोर से उठे तो बात बने

किशनलाल ईशरवालिया

हमलोगों का एक स्वभाव बन गया है कि खर्च से ही नाम होता है, इज्जत मिलती है और शोभा होती है। दिखावा, प्रदर्शन और चमक-धमक नहीं होने से फीका-फीका लगता है। कौन लायेगा सुधार ? मेरी समझ में एक ही वर्ग है जो ला सकता है सुधार वह है युवा वर्ग। आजकल लड़के लड़कियां अपनी इच्छानुसार वर-वधु ढूंढ़ने लगे हैं और हमें उनकी बात माननी पड़ती है। उन लड़के लड़कियों से मैं आग्रह और आवाहन करता हूं कि वे आगे आये और इस दहेज प्रथा, फिजुल खर्ची और अमीरी प्रदर्शन का खूब जोर से प्रतिवाद करे, विरोध करे, धरना दे और सत्याग्रह करे। जब मन पसंद साथी के लिये जिदी कर सकते हैं तो इस घिनौनी प्रथा पर क्यूँ चूप हैं ? इस बात पर वे विचार करे लोगों को समझाये अपने घरवालों को पहले कि आप लोग दहेज लेंगे तो हम शादी नहीं करेंगे। ऐसा एक आन्दोलन पूरे जोर से उठे तो बात बने। जब तक अंतरात्मा नहीं जगेगी, खुद को महसूस नहीं होगा, गलत सही का अनुमान नहीं होगा यह प्रथा ऐसे ही चलेगी लेकिन जो लोग जो नेता बनकर समाज के संचालक है प्रवचन देते हैं इसका विरोध करते हैं उनसे मेरी प्रार्थना है कि वे या तो इस प्रथा के अनुभवी न बने या फिर नेतागिरी न करे। दोनू हाथों में लडू रखना छोड़ दें उसका समाज पर बहुत बुरा असर पड़ता है।

2) तलाक आधुनिकता की देन है। हम लोग ओरों को समझाते हैं लेकिन अपने आपको नहीं समझते। कैसे हमें निपटना चाहिये। यह एक दिन की बिमारी नहीं है। विचारों में मतभेद रहन सहन में मतभेद खाने पीने में मतभेद- ये सब मतभेद शायद दूर हो सकते हैं लेकिन आजादी पर बंधन नहीं लग सकता। हम कहीं न कहीं चूक रहे हैं और इसका नतीजा भोगना पड़ता है। इसलिये पूर्ण स्वराज की तरह पूर्ण स्वतन्त्रता देनी होगी आज के नागरिकों को।

3) परिवार इसलिये टूट रहे हैं-उनमें त्याग की भावना नहीं है। परिवार के एक सदस्य को अपना जीवनदान देना होगा वो चाहे बड़ा हो छोटा हो लेकिन समझदार हो। उसका उद्देश्य यही होगा कि परिवार नहीं टूटे चाहे उसे कुछ भी करना पड़े। अपनी इच्छाओं को त्याग कर बाकी परिवार वालों की इच्छा का ही ध्यान उसका सर्वोपरि कर्तव्य होगा तभी परिवार बंधा रहेगा। ऐसा मेरा मानना है।

4) आचार, विचार और व्यवहार में कमी आ रही हो इसलिये जुबां की कीमत घट रही है हमलोग पहले प्याज तक नहीं खाते थे अब मांसाहारी, शराबी और कामुक बन गये हैं तो फिर दिलो में सचाई कहाँ रहेगी। भक्तिभाव, ध्यान, परोपकार की भावना लुप्त होती जा रही है समाज समय समय पर अच्छे-2 कार्यक्रम करवायें। सच्चे आदर्शों का चित्रण दिखाये। विचार गोष्टी बनें और गलत काम करने वालों को Expose करे और अच्छे काम करने वालों का हौसला बढ़ाये तो फिर हमारी जुबां की कीमत बढ़ने लगेगी।

5) शिक्षा, कला, साहित्य और संस्कृति का व्यापार न हो तो बहुत अच्छा होगा। देखने में आता है इनको व्यवसायिक दृष्टि से देखा जा रहा है। ऐसा न हो तो हमारी तस्वीर बदल जायेगी।

6) पहले हमारे अन्दर धार्मिक और आध्यात्मिक भावना रहती थी। हम लोग दान पुण्य और परोपकार की बाते करते थे। धन को संयम से रखते थे और उसका Investment बगैर Competition नई नई Lines में Products बनाने में लगाते थे जिसको Margin of Profit ज्यादा होता था। अब बेपड़ता काम हो रहा है। पड़ोसी का कारखाना दो shift चलता है अपना एक shift तो चलेगा। बस लगा दिया कारखाना और लूट गये Competition में। न कमाये और नकमाने दे। तब प्रगति कैसे होगी।आपस का द्वेषभाव, जलन और प्रतिहिंसा बढ़ रही है तो बड़ा Industrial Empire कैसे बनेगा। Live और Let Live वाली Policy से ही हम आगे बढ़ सकते हैं।

7) युवा समाज पर मुझे बहुत विश्वास है। यह जिस दिन जाग जायेगा उस दिन से सारी कुरीत्तियां खतम हो जायेगी लेकिन आज तो कुछ उल्टा ही है। प्रभु से प्रार्थना करता है कि इस वर्ग को बचा कर रखे। कभी न कभी इस वर्ग को आखें खुलेगी। अब तो बस इन्हीं का सहारा है।

33/1, नेताजी सुभाष रोड, रूम नं. 444, कोलकाता-700001

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

धर्म संस्कृति की जानकारी मिले

महेश कुमार गुप्ता

● विवाहों में दिखावा फिजूल खर्ची एवं आडम्बर बढ़ रही है। इसके परिणाम आने वाले दिनों में इतने भयंकर होंगे जिसकी शायद आज का समाज कल्पना भी नहीं करता होगा। यह एक ऐसा रोग है जो समाज को कोड की तरह लग चुका है। अगर समय रहते इसका इलाज नहीं किया गया तो नतिजे समाज के सभी वर्ग को भुगतने पड़ेंगे।

इसके लिए समाज के उच्च व मध्यम वर्ग को सबसे पहले पहल करनी चाहिए। हर जगह समाज को संगठनों में जाकर उनको इसको रोकने के लिए निर्देशित करना होगा। वहाँ के समाज के प्रतिनिधियों को व कुछ कार्यकर्त्ताओं को भी ढूंढ़ना होगा। उसको यह शपथ दिलाकर इस कार्य को किस रूप में किया जा सकता है। निर्देशित करना होगा। जगह-जगह समाज के कार्यकर्त्ता सभा बुलाकर अपने विचारों से अवगत कराते हुये इसके दुष्परिणामों की जानकारी दी जानी चाहिए।

इस विषयों पर कार्यक्रम बनवाकर प्रिंट व इलक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा लगातार समाज को जगाने की जरूरत है।

● परिवार का टूटना, तलाक ?

इसके लिए मैं निम्न को दोषी मानता हूँ।

(i) अभिभावकों व परिवार को
(ii) समाज को
(iii) शिक्षा को
(iv) मीडिया को

सबसे पहले अभिभावकों को बच्चों की सही शिक्षा, वातावरण, खानपान, रहन-सहन आदि सभी विषयों पर ध्यान रखना चाहिए। व उनको सही तरह से बच्चों को समझ कर उनकी भी बातों का या शंकाओं का सही समाधान करते रहना व सही गलत के बारे में जानकारी देते रहना उनका पहला कर्तव्य बनता है। किन्तु आज देखने में आता है कि अभिभावकों को बच्चों को देने के लिए पैसा है किन्तु समय का अभाव है। सभी चीजें पैसे से पूरी करने की सोच जो पनप रही है। यह एक मूल कारण है। जिससे बच्चों को सही दिशा निर्देश की हमेशा कमी खटकती है।

देखने में यह भी आ रहा है कि अभिभावकों को बच्चों की बात सुनने समझने के लिए या उनके सवालों के जबाव देने का भी समय नहीं है। इस तरह ऐसे समय में उसको जो वातावरण या साथ मिलता है वह उसी की अनुरूप ढल जाता है। उसे परिवार, घर व समाज की मान मर्यादा, रीति रिवाज, आदि किसी प्रकार की जानकारी नहीं हो पाना भी एक मुख्य कारण है। आज की पीढ़ी का सामाजिक समारोहों, सांस्कृतिक समारोहों व धार्मिक समारोहो की अवहेलना कर बड़े होटलों में डिस्को आदि में जाना पार्टियां अयोजित करना। इससे हम अपनी संस्कृति व रीति रिवाज भूलते जा रहे हैं व उसके परिणाम तलाक व परिवार टूटना, बुर्जुगों का अपमान, आनादर, तिरस्कार, आदि के रूप में देखने को मिल रहा है।

जबसे हमने अपनी भाषा संस्कृति की अवहेलना करके पाश्चात् भाषा संस्कृति की ओर बढ़े है। तबसे इस तरह के विकार आना शुरू हुआ है। मेरा मानना यह है कि अपनी भाषा व संस्कृति मुख्य रूप से अपना कर अन्य भाषाओं की जानकारी लेने में हर्ज नहीं लेकिन देश की सरकार, नेता, व उद्योगपति आदि सभी इसके अनदेखी करते आ रहें हैं। व शिक्षा में विदेशी भाषाओं को महत्व दिया जा रहा है। जिस देश की सरकार का ज्यातर कार्य विदेशी भाषाओं में है। उससे केवल आशा ही की जा सकती है।

आज बच्चों को 24 घन्टों में 15 घन्टे पढ़ाई कराई जाती है। उसके पास खेलने, समाज को जानने, परिवार को जानने, धर्म व संस्कृति, रीति रिवाज, इसको सही मायने में जानने, समझने का समय न बच्चों के पास है और न अभिभावकों के पास।

फिर जो थोड़ा-बहुत समय मिलने पर रही सही कसर पूरी करता है आज इलक्ट्रोनिक मीडिया व सिनेमा, टीवी सीरियल आदि जिसके बारे में कहने की जरुरत शायद नहीं है। इसका असर शायद आज बच्चों व बड़ों पर सबसे ज्यादा पड़ रहा है। चाहे इसे कुछ लोग मानने से इनकार करें। आज किसी भी घर में आपको फिल्मों डिस्को आदि की कैसेट व पुस्तकें जरुर मिल जायेगी और धार्मिक किताबें बहुत कम देखने को मिलेगी व होगी तो भी ध्यान कम ही उनकी तरफ जाता है।

मैं समझता हूँ आज जरूरत है। ऐसी शिक्षा की जिसमें ज्यादा से ज्यादा हमारी संस्कृति सभ्यता व रीति-रिवाजों की जानकारी बच्चों को मिले। ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों की जिसके द्वारा बच्चों को देश की शिक्षा, धर्म संस्कृति की जानकारी मिल सके।

233 लोटस टावर्स, मोगलराजपुरम्, विजयावाड़ा-520010

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

आंध्र प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

हैदराबाद : 72वें स्थापना दिवस पर गणवेश वितरण

आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सम्मेलन के 72वें स्थापना दिवस का पालन हैदराबाद के राजकीय माध्यमिक विद्यालय के जरूरतमंद छात्रों के मध्य विद्यालय गणवेश वितरित कर किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फेयर प्राइस शॉप डीलर एसोसियेशन के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष पुस्ते बाबूराव ने मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा किये जा रहे जन कल्याणकारी कार्यक्रमों की सराहना में कहा कि मारवाड़ी समाज के सेवा भाव के कारण ही यह समाज सर्वत्र समान रूप से आदर का पात्र बना हुआ है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग ने देश के तीव्र गति से विकास करने के लिए शत-प्रतिशत शिक्षित समाज के लक्ष्य को हासिल करना आवश्यक बताया। उन्होंने छात्रों से कहा कि हतोत्साहित व्यक्ति कभी जीवन में आगे नहीं बढ़ सकता अत: उन्हें परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करते हुए उत्साहपूर्वक आगे बढ़ना चाहिए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक कुमार स्वामी ने अतिथियों का स्वागत किया और उन्हें स्मृति चिह्न भेंट किए। कार्यक्रम में सम्मेलन के प्रान्तीय महामंत्री सर्वश्री नरेश चन्द्र विजयवर्गीय सहित श्री निवास सोमानी, सुखदेव शर्मा, रामप्रकाश भण्डारी तथा विद्यालय के शिक्षकगण उपस्थित थे।

अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के 72वें स्थापना दिवस के अवसर पर छात्रों में गणवेश वितरित करते हुए सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग, साथ में पुस्ते बाबुराव, रामप्रकाश भण्डारी एवं अन्य।

मारवाड़ी सम्मेलन भवन में गणतंत्र समारोह सम्पन्न

58वाँ गणतंत्र दिवास के अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन भवन में झण्डोत्तोलन उत्सव सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा की अध्यक्षता में मनाया गया। अध्यक्ष श्री शर्मा के अनुरोध पर पूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने राष्ट्रीय पताका फहराते हुए देश एवं समाज को एकजुट होने का आह्वान किया एवं राष्ट्र की प्रगति में योगदान देने की अपील की।

अध्यक्ष श्री शर्मा ने राष्ट्रीय गान के प्रश्चात् असम में बढ़ती हिंसा पर चिंता जतायी और कहा कि राष्ट्र की स्वतंत्रता के 60 वर्ष बाद भी हमें अलगाववाद एवं उग्रवाद का सामना करना पड़ रहा है। हमारा विकास तभी संभव होगा जब देश विकास करेगा। देश को नौजवान राजनेताओं की जरूरत है। कार्यकारिणी के सदस्य श्री जुगल किशोर जैथलिया ने सुजलाम-सुफलाम के तात्पर्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह राष्ट्रीय गीत देश की एकता का प्रतीक है।

पूर्व महामंत्री श्री दीपचन्द नाहटा ने कहा कि अन्य देशों की तुलना में हमारा राष्ट्र विकसित हो रहा है, लेकिन देश को उग्रवाद का सामना करना पड़ रहा है। हमें सशक्त रहना है और देश की सुरक्षा को सुदृढ़ करना है।

उपस्थित सदस्यों में महामंत्री सर्वश्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री रवीन्द्र कुमार लडिया, सदस्य सूर्यकरण सारस्वा, प्रेमचन्द्र सुरेलिया, परशुराम तोदी 'पारस', ओम लड़िया आदि थे।

कलकत्ता अग्रवाल समिति ने किया 13 जोड़ों का विवाह

4 फरवरी। श्री कलकत्ता अग्रवाल समिति का 10वां सामूहिक विवाह समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें 13 जोड़े विवाह बन्धन में बंधे। बारात श्री सत्यनाराण मंदिर प्रांगण से निकलकर नगर के विभिन्न भागों से होती हुई विवाह स्थल 42, चौरंगी रोड पहुँची जहां वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विवाह-संस्कार सम्पन्न किये गये। प्रत्येक जोड़े को बर्तन, टीवी, सिलाई मशीन आदि घरेलू उपयोग के सामान भेंट गिये गये। इस अवसर पर श्री कलकत्ता अग्रवाल समिति के ट्रस्टी व संयोजक सर्वश्री श्याम सुन्दर सराफ, अध्यक्ष शांति गोयनका, ओमप्रकाश रुइया, हरिकिशन निगानिया, बलभद्रलाल झुनझुनवाला, ओमप्रकाश सुरेका, शंकरलाल अग्रवाल, गुलजारी लाल केडिया, बाबूलाल अग्रवाल, शिवप्रकाश सराफ आदि ने नवदम्पत्तियों को आशीर्वाद प्रदान किया।

समिति के परिचय सम्मेलन में झारखण्ड, बिहार, उत्तर प्रदेश, ओड़ीसा आदि से 500 पात्र शामिल हुए थे।

युगपथ चरण

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की २३वीं राष्ट्रीय सभा

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की २३वीं राष्ट्रीय सभा २४-२५ दिसम्बर को झारखंड प्रान्त की कोयलांचल नगरी झरिया में सम्पन्न हुई। इस आयोजन की अध्यक्षता **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल के. जाजोदिया** ने की। राष्ट्रीय सभा के विभिन्न सत्रों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :-

उद्घाटन सत्र : राष्ट्रीय सभा दिशा २००६ का उद्घाटन झारखण्ड राज्य के मुख्यमंत्री श्री मधु कोड़ा द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर भी विशिष्ट वक्ताओं ने अपने विचार रखे तथा मंच के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। मुख्यमंत्री जी ने संगठन की प्रशंसा करते हुए कहा कि वास्तव में सरकार के विकास की नीतियों को सही दिशा यदि मिल सकती है तो वो सामाजिक संगठनों के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने कहा कि सही मायने में युवा ही देश की शक्ति है, युवाओं का विकास ही देश का विकास है। इसी दौरान अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की मासिक पत्रिका ''मंच संदेश'' का विमोचन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर सोनी एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री मनमोहन लोहिया ने मुख्यमंत्री श्री मधु कोड़ा के कर-कमलों से करवाया।

भारत में नये व्यापारिक अवसर : यह परिचर्चा श्री कैलाशपति तोदी के संयोजन में सम्पन्न हुई। परिचर्चा के विशिष्ट वक्ता के रूप में पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री महेश शाह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर सोनी, श्री जगदीश चन्द्र मिश्रा आदि की सहभागिता रही।

नारी स्वावलम्बन : नारी स्वावलम्बन सत्र का संचालन श्रीमती सम्पत्ति मोढा व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जयप्रकाश लाठ एवं क्षेत्रीय संयोजिका श्रीमती प्रमिला शर्मा ने किया। मुख्य वक्ता डॉ. वसुमति डागा ने विभिन्न परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह सत्य है कि आज नारी पढ़-लिख कर अपने पैरों पर खड़ी हो रहीहै, इससे यह अनुमान कतई नहीं लगाया जा सकता है कि आज की नारी स्वावलम्बी हो गयी है।

सूचना का अधिकार - एक नयी क्रांति का प्रादुर्भाव : संयोजक श्री गोविन्द मेवाड़ के नेतृत्व में सूचना के अधिकार पर विशेष सत्र सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता श्री विष्णु राजगढ़िया ने प्रतिनिधियों को विस्तार से सूचना के अधिकार के सम्बन्ध में बताकर लाभान्वित किया व आडियो विजुअल प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर डॉ. शशि शाह व अपने वक्तव्य में कहा कि जिस तरह यहां विभिन्न सत्रों के माध्यम से महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हो रही है, देखकर अच्छा लगा। यह सही है कि सबसे पहले स्वयं का विकास होगा तो देश का विकास तो स्वत: ही हो जायेगा। डॉ. शशि शाह ने वर्तमान युग की धारा के परिपेक्ष्य में अपेक्षायें की कि समाज के युवा एवं बच्चों को शिक्षा के लिए प्रेरित करने पर विशेष रूप से ध्यान दें।

जीवन में सफलता का व्यक्तित्व विकास सत्र : इस सत्र का संचालन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, मुख्त्राय श्री रवि अग्रवाल ने किया। इस सत्र के प्रमुख वक्ता श्री सरबजीत सिंह क्वात्रा : अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक तथा उद्यमी श्री कृष्णानन्द नारनोलिया उपस्थित रहे। श्री नारनोलिया ने कहा कि कोई भी व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में कितनी भी प्रगति कर ले, वह कभी अपने आपको सफल नहीं कह सकता, यदि वहां पर भी वह संतुष्ट नहीं है। श्री सरबजीत सिंह क्वात्रा ने जीवन की सफलता पर ऐसे कई पहलुओं को आडियो विजुअल के माध्यम से प्रस्तुत किया।

राजस्थानी भाषा व संस्कृति विकास व इसमें युवाओं की भूमिका : सत्र का संचालन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर सोनी ने किया। इस सत्र के प्रमुख वक्ता श्री ओंकार सिंह लाखावत, पूर्व सांसद ने कहा कि राजस्थानी भाषा के आठवीं सूची में स्थान मिलने से आपकी यह भाषा राजकीय भाषा में आ जायेगी।

एम्बुलेन्स सेवा

बिहार प्रान्त की मारवाड़ी युवा मंच **सुल्तानगंज शाखा** द्वारा २३ नवम्बर २००६ को नई एम्बुलेन्स सेवा का शुभारम्भ हुआ। इस सेवा का उद्घाटन माननीय **उप मुख्यमंत्री श्री सुशील मोदी** के करकमलों से हुआ। सुल्तानगंज शाखा को यह एम्बुलेन्स पूर्व राज्यसभा सांसद वर्तमान में **उपमुख्यमंत्री श्री सुशील मोदी** के निधि से प्राप्त हुई।

झारखण्ड प्रान्त की **चाईबासा शाखा** द्वारा द्वितीय नई एम्बुलेन्स सेवा का शुभारम्भ वातानुकूलित गाड़ी के साथ दिसम्बर माह में हुआ। शाखा को यह एम्बुलेन्स **एस. आर. रूंगटा समूह** द्वारा प्रदत्त की गयी है।

झारखण्ड प्रान्त की **चाण्डिल शाखा** द्वारा एम्बुलेन्स सेवा का शुभारम्भ। चाण्डिल शाखा को यह एम्बुलेंस **खाद्य एवं प्रसंस्करण मंत्री श्री सुबोध कान्त सहाय** की निधि से प्राप्त हुई है।

मारवाड़ी युवा मंच

मंच स्थापना दिवस का पालन

9 जनवरी। नव वर्ष एवं मंच स्थापना दिवस के उपलक्ष में मारवाड़ी युवा मंच की कांटाबांजी मिड टाउन (महिला) शाखा ने स्थानीय मानस भवन में 9 से 11 जनवरी तक तीन दिवसीय जादूकला प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया। झारखण्ड प्रान्त के सिमडेगा शहर के **युवा जादूगर आनन्द जैन** ने आँखों पर पट्टी बाँधकर कांटाबांजी की भीड़ भरी सड़कों पर मोटर साइकिल चलाकर अद्भुत कला का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के पाँच शो हुए। उपस्थित गणमान्यों में थे अग्रवाल सभा के अध्यक्ष सर्वश्री घासीराम गोयल, टेलीफोन अभियंता आर.के. मेहेर, पार्षद अनिल अग्रवाल, मंच के खरियार के प्रान्तीय सहायक मंत्री दिनेश अग्रवाल, शिशु रोग चिकित्सक डॉ. पी. के. पात्र, बेलपाड़ा के टेलीफोन अभियन्ता एम. एल. अग्रवाल एवं शाखाध्यक्ष युवा मुकेश जैन। कार्यक्रम का संयोजन युवा धीरज अग्रवाल ने किया।

युगपथ चरण

श्रेया सरावगी ने ऑक्सफोर्ड में रोशन किया मारवाड़ी समाज का नाम

सुश्री श्रेया सरावगी ने अपने राँची प्रवास के समय झारखण्ड के राज्यपाल महामहिम श्री सैयद सिब्ते रजी से भेंट की।

जिनके पास अकूत आत्म-विश्वास एवं अटल इरादे हों उनकी सफलता में सन्देह नहीं रहता। इसे प्रमाणित किया है झारखण्ड की श्रेया सरावगी ने। जो दो विषयों अर्थशास्त्र (2005) एवं समाज शास्त्र (2006) में स्नातकोत्तर करने के बाद ब्रिटेन के विश्वविख्यात ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में डाक्टरेट की उपाधि हासिल करने के लिए कार्य कर रही है। विश्वविद्यालय की अनुसंधान टीम का इस में रिसर्च सहायक की जिम्मेदारी निभा रही श्रेया के लिए जूनियर डीन का पद पाना भी रोचक अनुभव है। झारखंड के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी तथा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हनुमान सरावगी की पौत्री श्रेया का कहना है कि वह डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर भारत में अध्यापन का कार्य करेंगी।

मारवाड़ी युवा मंच

पूर्वोत्तर का प्रान्तीय अधिवेशन : संकल्प-2007

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच का दशम् प्रान्तीय अधिवेशन संकल्प २००७ **नयी चुनौती-नयी दिशाएं** ३० दिसम्बर व १ जनवरी २००७ को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन प्रान्तीय कार्यकारिणी के पश्चात प्रान्तीय सभा का आयोजन हुआ।

दशम अधिवेशन का विधिवत उद्घाटन दिनांक ३१ दिसम्बर को श्री प्रणव गोगोई (वस्त्र हथकरघा एवं कानून मंत्री, असम सरकार), श्री राणा गोस्वामी, विधायक जोरहाट, राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रान्तीय अध्यक्ष के करकमलों द्वारा मंच मशाल को प्रज्वलित कर किया गया। स्वागत गीत जोरहाट शाखा की सदस्याओं ने एवं अधिवेशन गीत श्रीमती संतोष शर्मा व श्री प्रेमचन्द खजांची ने गाकर सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया।

मुख्य अतिथि श्री प्रणव गोगोई ने मंच कार्यों एवं मारवाड़ी समाज के योगदानों की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं कहा कि सभी को युवा मंच के आदर्शों को अपनाकर कार्य करने चाहिए। अलंकर समारोह में प्रान्त द्वारा साहित्य, समाज सेवा एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु विशिष्ट जनों को सम्मानित किया गया।

अधिवेशन के उद्योग सत्र में पूर्वोत्तर के उद्यमी व्यवसायियों का चयन कर उनका सम्मान किया गया। इनमें प्रमुख रहे – श्री गोपी किशन मोर, श्री अनिल सराफ, श्रीमती मधुजैन, गुवाहाटी, श्री प्रकाश चन्द बडेर, तेजपुर। इस सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. एस. एस. बघेल वाइस चांसलर : असम एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी-जोरहाट रहे। इस सत्र का संचालन श्री अमित अग्रवाल ने किया।

महेन्द्र खेतान व्यवसायी के साथ सफल संगीतकार भी

पश्चिम बंगाल के रानीगंज के महेन्द्र खेतान व्यवसाय के साथ-साथ संगीत साधना के क्षेत्र में अपनी अनूठी पहचान बना चुके हैं। यहां के सुपरिचित समाज सेवी तथा व्यवसायी गोविन्दराम के तान के पुत्र में ख्याति प्राप्त कर अब शास्त्रीय संगीत की साधना में रत हैं।

बचपन से ही संगीत में रूचि रखने वाले महेन्द्र संगीत के क्षेत्र में अपनी कामयाबी का श्रेय अपने गुरुओं पं. गौरीशंकर जायसवाल, विख्यात गायक पं. जगदीश प्रसाद व सारंगीवादक उस्ताद रौशन अली खान को देते हैं। 1992 से ही श्री खेतान विख्यात हारमोनियम वादक सोहनलाल शर्मा से बाकायदा शास्त्रीय संगीत का सूक्ष्मता से अध्ययन कर रहे हैं। श्री खेतान का मानना है कि शास्त्रीय संगीत ही हर प्रकार के संगीत की नींव है तथा इस क्षेत्र में नियमित अभ्यास जरुरी है। रांची दूरसंचार व आकाशवाणी में नियमित भजन संगीत प्रस्तुत कर रहे खेतान बंगाल ही नहीं भारत के विभिन्न प्रान्तों में अपनी संगीत प्रतिभा का जादू बिखेर चुके हैं। एक साधारण गृहस्थ होने के बावजूद संगीत के माध्यम से समाज को जागरूक और संवेदनशील बनाना उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य है।

जागो मां जागो

कन्या भ्रूण संरक्षण

बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी युवा मंच की अध्यक्षा सरिता बजाज ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि मारवाड़ी युवा मंच की तमाम शाखाएं अपने-अपने क्षेत्र में जन-जागरण अभियान चलाकर भ्रूण हत्या को रोकने की मानसिकता लोगों में पैदा करें। प्रदेश में मारवाड़ी युवा मंच की 75 शाखायें कार्यरत है।

विलास विनाश है।

युगपथ चरण

हरियाणा नागरिक संघ का स्वर्ण जयन्ती वर्ष

पश्चिम बंगाल के कोलकाता महानगर में हरियाणा का प्रवासी समाज अपनी उद्यमशीलता के लिए वह सर्वत्र ख्यातिलब्ध है। कोलकाता महानगर में व्यापारिक और औद्योगिक प्रयासों के साथ-साथ सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं अन्यान्य गतिविधियों में कार्यरत है। 50 वर्ष पूर्व सन् 1956 ई. में (जब कि हरियाणा प्रदेश नहीं बना था) **हरियाणा नागरिक संघ** की स्थापना हुई जो सम्प्रति अनवरत अपनी लोकोपकारी सेवाओं से महानगर कोलकाता में एक प्रतिष्ठित एवं प्रिय संस्थान बन चुकी है। इस अवसर पर स्वर्ण जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर हरियाणा के राज्यपाल डा. ए. आर. किदवई एवं मुख्यमंत्री श्री भूपिन्दर सिंह हुड्डा के पधारने की संभावना है।

डा. नित्यानन्द (उत्तराखण्ड) "विवेकानन्द सेवा सम्मान" से सम्मानित

श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय की ओर से आयोजित 21वें विवेकानन्द सेवा सम्मान समारोह में डा. नित्यानन्द (उत्तराखण्ड) को पुस्तकालय की ओर से शॉल, मान पत्र एवं 61 हजार रुपये का चेक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि भारत सेवा श्रमसंघ के अध्यक्ष स्वामी प्रदीप्तानन्द जी महाराज ने अपने उद्‌गार में कहा कि जिस भारत भूमि पर जन्म लेने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं उस समाज एवं राष्ट्र के लिए स्वयं को समर्पित करने का संदेश दिया था स्वामी विवेकानन्द ने। अपने सम्मान के उत्तर में डा. नित्यानन्द ने सम्मान का मुख्य हकदार उन तमाम कार्यकर्त्ताओं को बताया जो उत्तराखण्ड की दुर्गम पहाड़ियों में उनके सात कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहे हैं।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सुप्रसिद्द उद्योगपति एवं समाज सेवी श्री मामराज अग्रवाल ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस देव से आशीर्वाद प्राप्त कर जगत्कल्याण एवं जन सेवा के लिए जो महत्वपूर्ण संदेश दिया वह हम सबके लिए आनुकरणीय है। कुमारसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री जुगल किशोर जैथलिया ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में बताया कि स्वामी विवेकानन्द एवं वन्देमातरम् न केवल हमारे गौरव हैं बल्कि भविष्य निर्धारक भी हैं।

कार्यक्रम का संचालन किया पुस्तकालय के अध्यक्ष डा० प्रेमशंकर त्रिपाठी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन किया श्री कृष्ण स्वरूप दीक्षित ने।

श्रद्धा सुमन

मोतीलाल सुरेका नहीं रहे

9 अक्टूबर 1932 में बलारा (राजस्थान) में इनका जन्म हुआ था। पेशे से आपने बिहार के दरभंगा शहर में एक सुपरिचित आयकर अधिवक्ता के रूप में ख्याति प्राप्त की। आप बिहार प्रान्त के "बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन" के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इसके अलावा आप कई संस्थाओं जिसमें प्रमुख मारवाड़ी कॉलेज (दरभंगा), आर. बी. कॉलेज (दलसिंग सराय), आईबीएम (दरभंगा), कमलेश्वरी प्रिया गरीब घर (दरभंगा) के अलावा अपने पेशे से जुड़ी कई संस्थाओं के पदाधिकारी रह चुके हैं। स्वभाव से मृदुभाषी श्री सुरेकाजी के दो पुत्र - रतन, रमेश एवं दो पुत्री - रूपा एवं रेखा के साथ भरापूरा परिवार है। इनकी पत्नी गायत्री देवी सुरेका का निधन पहले ही हो चुका था। मारवाड़ी सम्मेलन से इनका विशेष लगाव एवं सम्मेलन की बिहार इकाई को इनका योगदान हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने भी श्री मोतीलाल सुरेका के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए सम्मेलन की ओर से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

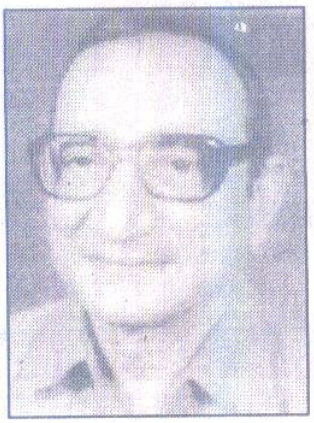

1 फरवरी, 2007, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष, समाजसेवी श्री मोतीलाल सुरेका के निधन पर एक शोकसभा सभा का आयोजन बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री विश्वनाथ केडिया के निवास स्थान पर उनकी अध्यक्षता में किया गया जिसमें सर्वश्री रामअवतार अग्रवाल, गोपाल शंकर शाक्त, अमरनाथ झा, वैद्यनाथ प्रसाद, पुरुषोत्तम तोदी, अशोक कुमार सिंह सहित मारवाड़ी एवं वैश्य समाज के प्रबुद्ध एवं गणमान्य उपस्थित थे। सभा में स्व. मोतीलाल सुरेका की स्मृति में दो मिनट मौन का पालन करते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया तथा दिवंगत आत्मा की शांति हेतु एवं उनके परिजनों को सम्बल प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गयी।

जुबान की कीमत, मारवाड़ की हकीकत।

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity .
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication- 28th February 2007
RNI Regd. No . 2868/68

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।
- पानी से पापड़ तक अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह में दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपने चाहिए।
- सजन-गोठ बन्द हो।
- नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७०००७
फोन - २२६८-०३१९

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319

To